व्यावहारिक सुसमाचार प्रचार

व्यावहारिक सुसमाचार प्रचार: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. परिचय।

II. सुसमाचार की अधिक संपूर्ण समझ।

कक्षा #२:

III. सुसमाचार में सम्मिलित है: सुसमाचार सन्देश (वचन)।

कक्षा #३:

IV. सुसमाचार में सम्मिलित है: सुसमाचार संदेशवाहक (जीवनशैली)।

कक्षा #४:

V. सुसमाचार में सम्मिलित है: सुसमाचार के तरीके (सामर्थ)।

कक्षा #५:

परिशिष्ट विषय:

क१. छह सुसमाचार प्रस्तुतियाँ।

क२. २५ उद्धार के संक्षिप्त तथ्य।

क३. व्यक्तिगत गवाही का उदाहरण।

क४. व्यक्तिगत पुस्तिका का उदाहरण।

क५. उद्धार से संबंधित प्रश्नों और बहानों के प्रत्युत्तर।

क६. पूरी हुई भविष्यद्वाणी के माध्यम से सुसमाचार प्रचार।

परीक्षा।

टिप्पणियाँ -

व्यावहारिक सुसमाचार प्रचार: परीक्षा

संभावित २० अंक प्रश्न

१) सुसमाचार संदेश की प्रतिक्रिया में सम्मिलित दो पहलुओं का वर्णन करें और दिखाएँ कि कैसे प्रत्येक में "स्वयं को मारने" की आवश्यकता है (पृष्ठ १२,१३)।

२) जीवन-शैली के चार क्षेत्रों का वर्णन कीजिए जो हमारी गवाही देने की प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं (पृष्ठ १९-२२)।

३) व्यक्तिगत गवाही के तीन तत्वों का वर्णन करें और वर्णन करें कि आप इसे कैसे साझा करेंगे (पृष्ठ २४-२६)।

संभावित १० अंक प्रश्न

१) "सुसमाचार" शब्द की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का संक्षिप्त विवरण दें (पृष्ठ ६)।

२) सुसमाचार की घोषणा के महत्व को दिखाने के लिए रोमि. १०:१३-१५ का प्रयोग करें (पृष्ठ १५)।

३) गवाही से सुसमाचार प्रस्तुति में परिवर्तन करने के विचार की व्याख्या करें और एक प्रश्न सम्मिलित करें जिसका उपयोग परिवर्तन करने के लिए किया जा सकता है (पृष्ठ ३३)।

४) एक नए विश्वासी के साथ आगे की कार्रवाई करने के चार महत्वपूर्ण बिंदुओं की सूची बनाएँ (पृष्ठ ३८)।

५) एक अनुच्छेद में, "कहानी" के तरीके से सुसमाचार को प्रस्तुत करने की सामग्री को संक्षेप में प्रस्तुत करें (पृष्ठ ४६)।

६) इस बहाने का प्रत्युत्तर देने के लिए दो पद्यों का प्रयोग करें कि "मेरे पाप बड़े पाप नहीं हैं" (पृष्ठ ५५)।

व्यावहारिक सुसमाचार प्रचार

I. परिचय।

टिप्पणियाँ -

पाठ्यक्रम अवलोकन

यह पाठ्यक्रम उन लोगों के लिए एक व्यावहारिक सहायता के रूप में है जो यीशु मसीह में अपने विश्वास को अधिक प्रभावी ढंग से उन लोगों के साथ साझा करना चाहते हैं जो अभी तक मसीह के अनुयायी नहीं हैं। ध्यान मैत्री सुसमाचार प्रचार या गवाही पर है जो एक आराम के प्राकृतिक तरीके से होता है। यह माना जाता है कि अधिकांश सुसमाचार प्रचार के लिए प्रारंभिक समायोजन एक कलीसिया के वातावरण के बाहर होगा, उन विशिष्ट स्थानों में जहाँ गैर-मसीही लोग रहते हैं, काम करते हैं और सामाजिककरण करते हैं।

लेखक की टिप्पणी:

प्रोटेस्टेंट रिफॉर्मेशन के संस्थापक मार्टिन लूथर ने सुसमाचार प्रचार को "एक भिखारी दूसरे भिखारी को बता रहा है कि भोजन कहाँ मिलेगा" के रूप में वर्णित किया। हम भिखारी हैं और यीशु मसीह भोजन हैं।

जब हम सुसमाचार प्रचार में सम्मिलित होते हैं तो यह छवि हमें नम्रता की हमारी आवश्यकता का स्मरण दिलाती है। हम सभी को यीशु की सख्त आवश्यकता है और लोगों के लिए परमेश्वर का प्रेम सार्वभौमिक और निष्पक्ष है। आइए हम इस दृष्टिकोण को बनाए रखें जब हम उन लोगों तक पहुँचते हैं जो मसीह के बिना हैं।

चर्चा विषय

सुसमाचार प्रचार कलीसिया के मूलभूत स्तंभों में से एक है। यह कलीसिया का निर्माण करता है और स्वाभाविक रूप से कलीसिया से जुड़ा होना चाहिए। कलीसिया एक ऐसा स्थान होना चाहिए जो लगातार नए "मसीही बच्चों" का को पैदा और उनका स्वागत करता हो।

सुसमाचार प्रचार से संबंधित निम्नलिखित समस्याओं पर चर्चा करें:

- बहुत से सुसमाचार प्रचार का संचालन कलीसियाओं से न जुड़े प्रयासों के माध्यम से किया जाता है और इस प्रकार, नए विश्वासी स्थानीय कलीसियाओं से नहीं जुड़ते हैं।
- कई कलीसियाओं ने अपने उद्देश्य के दर्शन को खो दिया है: खोए हुओं तक पहुँचने और कलीसिया की देह को खोए हुओं तक पहुँचाने के लिए तैयार होना।
- कई कलीसियाएँ का ध्यान आंतरिक रूप से केंद्रित हो जाता है और नए मसीहियों या अपरिपक्व विश्वासियों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील नहीं रहती हैं।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

पुल्पिट से सुसमाचार प्रचार करना या लोगों के समूहों से बात करना सुसमाचार प्रचार के प्रभावी रूप हैं। हालाँकि, ये तरीके विशिष्ट मसीही व्यक्ति के लिए सामान्य नहीं हैं।

वास्तव में, अधिकांश मसीही (८५%) किसी मित्र या रिश्तेदार के प्रभाव के परिणामस्वरूप मसीह में लाए जाते हैं। मैत्री सुसमाचार प्रचार अब तक का, सबसे अधिक फलदायी प्रकार का सुसमाचार प्रचार है।

मैत्री सुसमाचार प्रचार से संबंधित निम्नलिखित समस्याओं पर चर्चा करें:

- अधिकांश लोग जिन्हें मसीह की आवश्यकता है, वे कलीसिया में नहीं जाते हैं, इस प्रकार कलीसिया के कई सुसमाचार प्रचार के प्रयास फलदायी नहीं होते हैं।
- अधिकांश सुसमाचार प्रचार के प्रयास सेवकों पर निर्भर हैं और इसमें कलीसिया सम्मिलित नहीं है, इस कारण फल सीमित है।
- "व्यक्तिगत सुसमाचार प्रचार" की छवि या रूढ़ प्रारूप लोगों को सुसमाचार प्रचार की सेवकाई के प्रति असहज होने का कारण बनता है।
- कलीसिया के अधिकांश लोग सुसमाचार प्रचार का दृढ़ वरदान या सुसज्जित होना महसूस नहीं करते हैं। इस प्रकार, वे सुसमाचार प्रचार में सम्मिलित नहीं होते हैं।
- बहुत से लोगों को लगता है कि वे बहुत व्यस्त हैं या उनकी समय-सारणी उन्हें सुसमाचार प्रचार में सम्मिलित होने की अनुमति नहीं देती है।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

प्रकृति के नियमों (सामान्य प्रकाशन) के माध्यम से, हम समझ सकते हैं कि सभी लोग परमेश्वर के विषय में क्या जानते हैं। इसी प्रकार, परमेश्वर की लिखित व्यवस्था (विशेष प्रकाशन) के माध्यम से, हम समझ सकते हैं कि सभी लोगों को परमेश्वर से संबंधित क्या चाहिए।

सामान्य और विशेष प्रकाशन से संबंधित निम्नलिखित अवधारणाओं पर चर्चा करें:

सामान्य प्रकाशन

सभी लोग क्या जानते हैं? (प्रकृति के नियमों के माध्यम से)

१) लोग सच्चाई जानते हैं, परन्तु सच्चाई को दबाते हैं (भज. १९:१-४, रोमि. १:१८)।
२) लोग अपने विवेक में परमेश्वर को जानते हैं, परन्तु उसे अस्वीकार करते हैं (रोमि. १:१९)।
३) लोग परमेश्वर के अलौकिक स्वभाव और सामर्थ को जानते हैं क्योंकि वे उनकी रचना के माध्यम से स्पष्ट रूप से देखे और समझे जाते हैं। वे बिना किसी बहाने के हैं (रोमि. १:२०)।
४) लोग जानते हैं कि वे मूर्तिपूजक (पापी) हैं, क्योंकि वे परमेश्वर की महिमा या धन्यवाद नहीं करते हैं (रोमि. १:२१-२३)।
५) लोग परमेश्वर को सृष्टिकर्ता और न्यायी के रूप में जानते हैं (रोमि. १:२५,३२)।

विशेष प्रकाशन

सभी लोगों को क्या चाहिए? (परमेश्वर की लिखित व्यवस्था के माध्यम से)

१) लोगों को यीशु मसीह के सत्य की आवश्यकता है (यूह. १४:६)।
२) लोगों को चाहिए कि मसीह के द्वारा उनका बुरा विवेक शुद्ध किया जाए (इब्रा. १०:२२)।
३) लोगों को यीशु मसीह में प्रकट परमेश्वर के अलौकिक स्वभाव और सामर्थ को देखने और समझने की आवश्यकता है (इब्रा. १:१-३)।
४) लोगों को मूर्तिपूजा से छुटकारा पाने और यीशु मसीह की आराधना करने की आवश्यकता है (कुलु. ३:१-५)।
५) लोगों को यीशु मसीह को उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में ग्रहण करने की आवश्यकता है (२ पत. ३:१४-१८)।

टिप्पणियाँ -

II. सुसमाचार की अधिक संपूर्ण समझ।

क. "सुसमाचार" की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

१. शब्द "सुसमाचार" उद्धार के शुभ समाचार को संदर्भित करता है जो यीशु मसीह को जानने के द्वारा प्राप्त होता है।

२. सुसमाचार मूल रूप से पुराने नियम का एक सैन्य शब्द था।

क. इसका उपयोग एक सैन्य संदेशवाहक का वर्णन करने के लिए किया जाता था जिसे समुद्र या तटीय युद्ध के बाद लोगों को युद्ध के परिणामों के विषय में बताने के लिए अंतर्देशीय भेजा जाता था।

ख. युद्ध में विजय का "सुसमाचार" सीधी रीति से कुल विनाश से बच जाने या शत्रु के हाथों मरने से बच जाने से जुड़ा था।

ग. संदेशवाहक गाँव-गाँव दौड़कर सुसमाचार सुनाता था। साथ ही, वह घोषणा करता था कि विजयी राजा जल्द ही लोगों के साथ जश्न मनाने के लिए पहुँचेंगे कि शत्रु पराजित हुआ है।

३. मसीही समुदाय ने इस समझ को अपनाया और इसे यीशु मसीह के बचाने के कार्य में लागू किया।

क. सुसमाचार के प्रचारक का उपयोग उन लोगों का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो मसीह के अच्छे समाचार की घोषणा करते हैं।

ख. सुसमाचार प्रचार केवल एक क्रिया या गतिविधि है जो दूसरों को सुसमाचार से अवगत कराने से जुड़ी है।

टिप्पणियाँ -

ख. प्रेरित पौलुस सुसमाचार को तीन बराबर भागों के रूप में प्रस्तुत करते हैं (१ थिस्स. १:५ से)।

लेखक की टिप्पणी:

निम्नलिखित आरेख इस पाठ्यक्रम की सामग्री को समझने की कुंजी है। यह सुसमाचार को तीन बराबर भागों के रूप में प्रस्तुत करता है। पाठ्यक्रम का शेष भाग आरेख के प्रत्येक भाग को विस्तार से प्रस्तुत करने के लिए समर्पित है।

सुसमाचार में तीन बराबर भाग हैं (१ थिस्स.१:५):

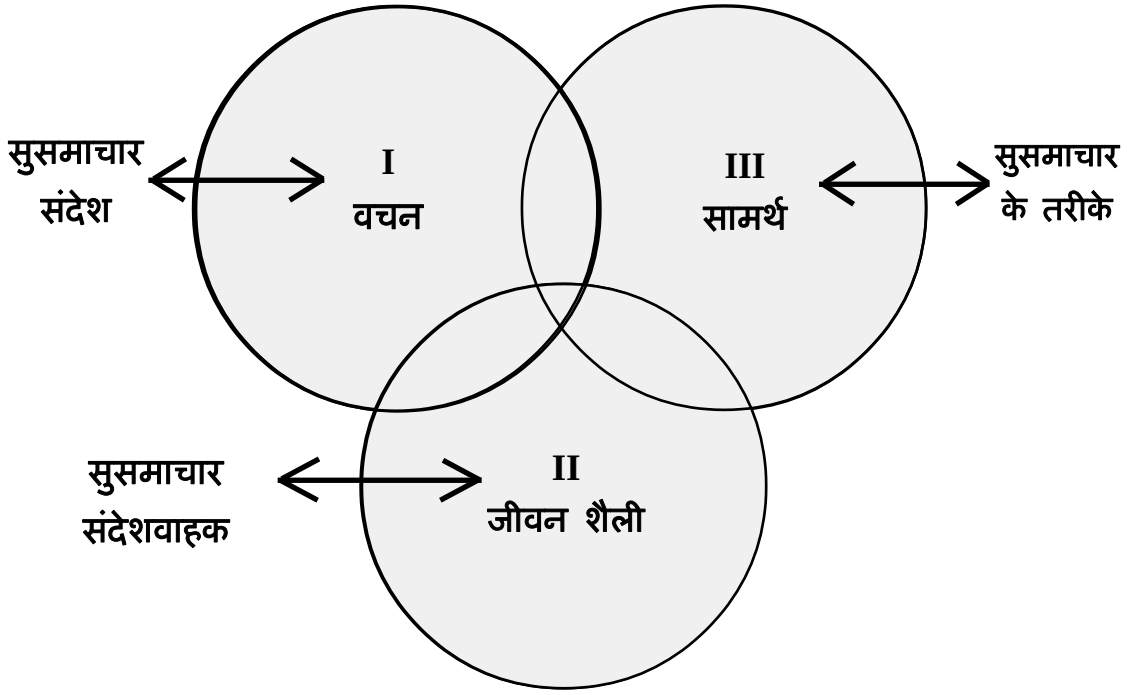

टिप्पणियाँ -

१) **वचन** का भाग एक।

क. पौलुस ने कहा, "हमारा सुसमाचार तुम्हारे पास शब्दों में पहुँचा।" (१ थिस्स. १:५क) (वह निरे शब्दों में नहीं आया, परन्तु आया तो शब्दों में ही था।)

ख. वचन सुसमाचार संदेश के विषय में बोले गए शब्दों को साझा करने से जुड़ा है (देखें १ कुरिं. १५:४)।

ग. हम इस पाठ्यक्रम के बाद के भाग में सुसमाचार संदेश को पाँच सरल अवधारणाओं के रूप में प्रस्तुत करेंगे।

२) भाग दो **जीवन शैली** है।

क. पौलुस ने कहा, आपके कल्याण के लिए हमारा आचरण आपके बीच है। (१ थिस्स.१:५ग)

१) थिस्सलुनीके वासियों के बीच रहने हेतु पौलुस के सेवा-नियुक्त दल का एक ही उद्देश्य था। वह यह था कि वे सुसमाचार प्राप्त कर सकें।

२) सुसमाचार को उन संदेशवाहकों की जीवन शैली के भीतर जीया जा रहा था जो उसे साझा करने आए थे।

ख. पौलुस सुसमाचार (मसीह द्वारा) द्वारा इतने परिवर्तित हो गए कि उनका जीवन स्वयं सुसमाचार का एक जीवित प्रकटीकरण और उदाहरण बन गया था।

३) तीसरा भाग **सामर्थ** है।

क. पौलुस ने कहा, "...सामर्थ्य, पवित्र आत्मा तथा दृढ़ विश्वास के साथ आप लोगों के बीच शुभ समाचार का प्रचार किया।" (१ थिस्स. १:५ख)

१) सुसमाचार में परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ है।

क) इस सामर्थ ने यीशु मसीह को मरे हुओं में से जिलाया।

ख) सुसमाचार में खोई हुई आत्माओं के उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ है (रोमि. १:१५-१७)।

२) यह सामर्थ पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व के माध्यम से बहती है।

क) पवित्र आत्मा की सामर्थ विभिन्न तरीकों से प्रकट होती है: चिन्ह और चमत्कार, लोगों का बचाया जाना, आत्मिक वरदान, आदि।

ख) हमें पवित्र आत्मा के साथ अपने संबंध को विकसित करना चाहिए और पवित्र आत्मा की अगुवाई द्वारा निर्देशित होना सीखना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

३) पवित्र आत्मा की सामर्थ गहरी कायलता लाती है, जो पश्चाताप की ओर ले जाती है।

क) यह पवित्र आत्मा की सामर्थ और कार्य है जो लोगों को मसीह के पास लाता है। यह मनुष्य का काम नहीं है।

ख) कोई भी व्यक्ति दूसरे को पश्चाताप करने के लिए नहीं मना सकता। केवल परमेश्वर का आत्मा ही किसी व्यक्ति को पश्चाताप करने के लिए कायल कर सकता है।

चर्चा विषय

लोगों को मसीह के पास लाने के लिए सुसमाचार के तीन बराबर भागों को एक साथ काम करना चाहिए। फिर भी, हम आम तौर पर घोषित वचन पर जोर देते हैं, परन्तु जीवन शैली और सामर्थ तत्वों पर ध्यान नहीं देते हैं!

- जीवन शैली या सामर्थ तत्वों के बिना सुसमाचार प्रचार करने पर कुछ परिणाम या क्या समस्याएँ होती हैं?

सुसमाचार

तीन भाग		**मिलकर काम करना**
वचन	-	यीशु मसीह में पाए गए उद्धार के सुसमाचार के संदेश की घोषणा करना।
जीवन शैली	-	अपनी जीवन शैली को इस संदेश का जीवंत प्रकटीकरण या उदाहरण होने की अनुमति देना।
सामर्थ	-	हमें निर्देशित करने, स्वयं को प्रकट करने और दूसरों के हृदयों को बदलने के लिए परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ पर भरोसा करना।
सुसमाचार		**लोग मसीह की ओर मुड़ते हैं**

टिप्पणियाँ -

III. सुसमाचार में सम्मिलित हैं: सुसमाचार सन्देश (वचन)।

क. सुसमाचार संदेश सरल है।

१. हम सुसमाचार को अधिक जटिल बनाने में लग जाते हैं, जिसके कारण संदेश विवरण में खो जाता है।

२. सुसमाचार संदेश को साझा करने के संबंध में मानव संचार के मूल सिद्धांत पर विचार किया जाना चाहिए।

क. लोग हमारे संचार के तीन पहलुओं से प्रभावित होते हैं:

१) जो बोला गया है, उसकी सामग्री - ७% (सबसे कम

२) आवाज में बदलाव और पहुँचाना - २८%

३) शारीरिक भाषा और कथित रवैया - ६५% (सबसे प्रभावशाली)

ख. इन निष्कर्षों के अनुसार, हम <u>जो</u> कह रहे हैं लोग उससे प्रभावित नहीं होते हैं, बल्कि इससे कि हम उसे <u>कैसे</u> कह रहे हैं!

१) यदि हमारी शारीरिक भाषा, रवैया, या शैली शत्रुतापूर्ण, उदासीन या प्रेमरहित प्रतीत होते हैं, तो सुसमाचार का संदेश अच्छी रीति से प्राप्त नहीं होगा।

२) यदि हमारे अनकहे कार्य संदेश के अनुरूप नहीं हैं, तो संदेश शून्य हो जाएगा।

३. हम कभी-कभी गैर-मसीहियों के परिवर्तित होने से पहले ही उन्हें शिष्य बनाने का प्रयास करते हैं। इससे भी गलत संदेश जाता है।

१) लोग सोचते हैं कि मसीहियत कुछ गतिविधियों का प्रदर्शन है, बजाय इसके कि उसे मसीह के साथ एक संबंध के रूप में देखें।

२) लोग निराश भी हो जाते हैं क्योंकि वे उस परिवर्तनकारी सामर्थ या विजय का अनुभव नहीं कर सकते जो एक शिष्य बनने के लिए आवश्यक है, जब तक कि मसीह उनका नया जन्म नहीं कर देते हैं।

ख. सुसमाचार संदेश में पाँच सरल अवधारणाएँ हैं।

टिप्पणियाँ -

लेखक की टिप्पणी:

उद्धार की शिक्षा में कई गहरी धर्मवैज्ञानिक अवधारणाएँ सम्मिलित हैं। मसीही अगुवों के रूप में हमें इन्हें जानना चाहिए और इन्हें सिखाने में सक्षम होना चाहिए।

हालाँकि, सुसमाचार संदेश के संचारक के रूप में, हमें अवश्य सरलता से संवाद करने में सक्षम होना चाहिए ताकि सभी लोग संदेश को समझ सकें और मसीह के प्रति प्रतिक्रिया कर सकें।

इस प्रकार, निम्नलिखित पाँच सरल अवधारणाएँ किसी भी समय किसी के साथ सुसमाचार साझा करने के लिए एक उपकरण के रूप में प्रदान की गई हैं।

सुसमाचार और परमेश्वर के राज्य की गहरी शिक्षा के अध्ययन के लिए, MOTMOT अर्थात मोटमोट पाठ्यक्रम, सुसमाचार एवं परमेश्वर का राज्य को देखें।

सुसमाचार की पाँच अवधारणाएँ

१. परमेश्वर का प्रेम	- यूहन्ना ३:१६	क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा, कि उन्होंने अपना एकलौता पुत्र दे दिया।
२. हमारी समस्या	- रोमि. ३:२३	क्योंकि सब ने पाप किया और सब परमेश्वर की महिमा से वंचित हो गए हैं।
३. परिणाम	- रोमि. ६:२३	पाप की मजदूरी मृत्यु है।
४. परमेश्वर का प्रावधान	- रोमि. ५:८	परमेश्वर इसमें हमारे लिए अपना प्रेम प्रमाणित करते है कि जब हम पापी ही थे, मसीह हमारे लिए मरे।
५. हमारी प्रतिक्रिया	- प्रेरितों ३:१९	अतः आप लोग पश्चात्ताप करें और परमेश्वर के पास लौट आयें, जिससे आपके पाप मिट जायें।

टिप्पणियाँ -

क. सुसमाचार संदेश के प्रति प्रतिक्रिया।

लेखक की टिप्पणी:

जब अविश्वासियों का मन सुसमाचार संदेश द्वारा कायल हो जाता है और वे मसीह की ओर मुड़ते हैं, तो उनके जीवन में दो प्रतिक्रियाएँ आरम्भ होती हैं: यीशु उद्धारकर्ता के रूप में और यीशु प्रभु के रूप में। इन दोनों प्रतिक्रियाओं में स्वयं को मारना सम्मिलित है, जिसका अर्थ है अपनी इच्छाओं को दूर करना और उनके प्रति "मरना" और पूरी रीति से मसीह के प्रति समर्पण करना।

१. उद्धार में दो प्रतिक्रियाएँ सम्मिलित हैं (रोमि. १०:९ देखें)।

क. यीशु हमारे उद्धारकर्ता हैं (प्रेरितों के काम ४:१२)।

१) हमें यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान को अनन्त जीवन प्राप्त करने के एकमात्र तरीके के रूप में स्वीकार करना चाहिए।

क) यीशु के लहू के बिना पाप की कोई क्षमा नहीं है।

ख) अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए कोई अन्य धर्म, दर्शन या आत्मिक माध्यम नहीं है।

२) हमें क्रूस की ठोकर को स्वीकार करना चाहिए।

क) यीशु ने हमारे उद्धार के लिए आवश्यक <u>सभी</u> कार्य कर दिए हैं।

ख) हमारा उद्धार पूरी रीति से अनुग्रह का उपहार है, यह हमारे द्वारा किसी भी रीति से अर्जित नहीं किया गया है (इफि. २:८,९)।

ख. यीशु हमारे प्रभु हैं (रोमि. १०:९)।

१) हम हर बात के उत्तर के लिए यीशु की ओर देखते हैं। यीशु हमारे जीवन के स्वामी और शासक हैं।

२) हमारी इच्छा और अपेक्षा उनसे निर्देश प्राप्त करने की है। हमें उनकी इच्छा के अनुरूप होना है। इसमें सम्मिलित है:

क) उनकी इच्छा के लिए हमारे मार्गदर्शक के रूप में बाइबल को स्वीकार करना।

टिप्पणियाँ -

ख) कलीसिया को हमारी संगती समुदाय के रूप में स्वीकार करना।

ग) हमारे जीवन के लिए उनके उद्देश्य और वह हमें जो भी सेवा-नियुक्त कार्य देते हैं, उसको स्वीकार करना।

२. इन दो प्रतिक्रियाओं में स्वयं को मारना सम्मिलित है। स्वयं को मारना यीशु को हमारे जीवन का प्रभु और उद्धारकर्ता बनने की अनुमति देने का एक स्वाभाविक परिणाम है (देखें मत्ती १६:२४,२५)।

क. यीशु हमारे प्रभु के रूप में हमारे स्वयं को मारते हैं।

१) हमें अपने जीवन को नियंत्रित करने की इच्छा को मारना चाहिए। हमें अपने अधिकार छोड़ देने चाहिए।

२) हम वर्तमान की बातों के संबंध में यीशु की ओर देखते हैं; वह हमारे प्रभु हैं।

ख. यीशु हमारे उद्धारकर्ता के रूप में हमारे स्वयं को मारते हैं।

१) हमें उद्धार हेतु अपने आप पर भरोसा करने की इच्छा के लिए मरना चाहिए।

२) हमें अनंत काल की चीज़ों के संबंध में यीशु की ओर देखना चाहिए; वह हमारे उद्धारकर्ता हैं।

ग. स्वयं को मारने का सारांश।

१) सुसमाचार संदेश हेतु बचाने वाली प्रतिक्रिया का वर्णन करने का सबसे अच्छा तरीका यह कहना है कि हम स्वयं को मारते हैं और यीशु के लिए जीते हैं (लूका ९:२३; मत्ती १६:२४,२५)।

२) पौलुस ने इस अवधारणा को स्पष्ट रूप से सारांशित किया जब उन्होंने कहा, "मैं मसीह के साथ क्रूस पर मर गया हूँ। मैं अब जीवित नहीं रहा, बल्कि मसीह मुझ में जीवित हैं। (गला. २:१९ग - २०)।

३) मसीह के लिए फलदायी होने और आत्मिक फल को गुणा करने के लिए, हमें मरना चाहिए (यूहन्ना १२;२४, २५)।

४) हम जितने अधिक समय तक मसीह के साथ रहेंगे, मारने के लिए स्वयं के उतने ही अधिक क्षेत्र होंगे। यह हमेशा एक चलते रहने वाली प्रक्रिया होगी (फिलि. ३:१२)।

टिप्पणियाँ -

IV. सुसमाचार में सम्मिलित हैं: सुसमाचार प्रचारक (जीवनशैली)।

लेखक की टिप्पणी:

बहुत से विश्वासियों को सुसमाचार प्रचारक होने के लिए नहीं बुलाया गया है। संभवत: दस में से एक मसीही को विशेष रूप से वरदान दिया गया है और एक सुसमाचार प्रचारक के रूप में बुलाया गया है। एक सुसमाचार प्रचारक के पास लोगों को मसीह को ग्रहण करने में नेतृत्व करने के लिए, अन्य मसीहियों को अधिक प्रभावी सुसमाचार प्रचार हेतु सुसज्जित करने के लिए, और आम तौर पर मसीही लोगों को पूरी रीति से प्रोत्साहित करने के लिए एक अद्वितीय वरदान है (इफि. ४:११, १२)। अधिकांश मसीही इस विशेष बुलाहट में कार्य नहीं करते हैं।

हालाँकि, सभी मसीहियों को मसीह हेतु एक संदेशवाहक होने के लिए बुलाया गया है (२ तीमु. १:८अ; ४:५)। हम सभी को गवाह बनने और अपने जीवन में यीशु के प्रभुत्व के विषय में गवाही देने का आदेश दिया गया है। एक संदेशवाहक के रूप में, हमें उन लोगों को सुसमाचार संदेश बाँटने के लिए कायल होना चाहिए जो मसीह के बिना खो रहे हैं।

आपसे एक उत्कृष्ट सुसमाचार प्रचारक होने की अपेक्षा नहीं की जाती है, परन्तु आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप सुसमाचार के लिए बेशर्म हों और प्रभु के लिए एक संदेशवाहक के रूप में गवाही देने के इच्छुक हों। शब्दों के साथ या बिना, आपका जीवन एक संदेश देता है। आशा है, आप एक सुसमाचार संदेशवाहक के रूप में जी रहे हैं।

क. सभी विश्वासी सुसमाचार के प्रचारक (गवाह) हैं।

१. हमें सुसमाचार का प्रचार करना है (देखें मत्ती १०:७; १०:२७, ३२-३३; मत्ती २४:१४; लूका ९:६०; प्रेरितों के काम ५:२०, ४२)।

२. हमें साक्षी या गवाही देनी है (देखें यूहन्ना ४:३९; २ तीमु. १:८क)।

३. हमें गवाह बनना है (देखें प्रेरितों के काम १:८; २ तीमु. ४:५)।

४. हमें बोलने में शर्माना नहीं चाहिए (देखें मत्ती १०:३२-३३; मर. ८:३८; लूका ९:२६; और २ तीमु. १:८अ)।

टिप्पणियाँ -

ख. प्रचारक को अवश्य सुसमाचार बाँटना चाहिए।

१. सुसमाचार प्रचार में सबसे बड़ी बाधा केवल तब होती है जब हम खोए हुए लोगों के साथ सुसमाचार को बाँटने में असफल हो जाते हैं।

क. बहुत कम लोग मसीह के पास आएंगे यदि हम उन्हें यीशु के विषय में कभी नहीं बताएंगे। किसी को उन्हें बताना ही होगा। संदेशवाहक को सुसमाचार संदेश का प्रचार करना चाहिए (रोमि. १०:१३-१५ देखें)।

ख. अधिकांश मसीहियों के लिए, इसका अर्थ केवल अपने विश्वास को साझा करना है, प्रभावशाली प्रचार नहीं। परमेश्वर आपको आपकी अपनी व्यक्तित्व शैली और वरदान में उपयोग करेंगे।

२. हमें खोए हुए लोगों को सुसमाचार बाँटने के अपने डर या प्रतिरोध को दूर करना चाहिए।

क. अपने हृदय को बदलने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करके, हम तरस या चिंता की कमी को दूर कर सकते हैं।

ख. मैत्री सुसमाचार प्रचार के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित होने के द्वारा, हम सुसमाचार प्रचार के संबंध में असफलता के भय को दूर कर सकते हैं।

चर्चा विषय

रोमि. १०:१३-१५ के निम्नलिखित आरेख का उपयोग सुसमाचार को बाँटने के महत्व पर चर्चा करने के लिए करें।

रोमि. १०:१३-१५ की प्रक्रिया

अविश्वासी बच जाते हैं (रोमि. १०:१३), क्योंकि:

↓

वे प्रभु का नाम लेते हैं (रोमि. १०:१३), क्योंकि:

↓

वे विश्वास करते हैं (उनमें) (रोमि. १०:१४), क्योंकि:

↓

उन्होंने सुन लिया है (रोमि. १०:१४), क्योंकि:

↓

एक विश्वासी ने प्रचार किया (मसीह को साझा किया) (रोमि. १०:१४), क्योंकि:

↓

विश्वासी को बाहर भेजा गया (एक प्रचारक के रूप में) (रोमि. १०:१५)

टिप्पणियाँ -

ग. सुसमाचार प्रचार के लिए अपनी व्यक्तिगत शैली और वरदान का उपयोग करना।

गवाही देने की विभिन्न शैलियाँ:

सुसमाचार प्रचारक/पासबान बिल हाइबल्स ने अपनी पुस्तक, ऑनेस्ट टू गॉड? में उल्लेख किया है कि प्रत्येक विश्वासी की गवाही देने की एक अनूठी शैली होती है। हमें किसी अन्य की नकल करने की आवश्यकता नहीं है। परमेश्वर कई व्यक्तित्वों और शैलियों का उपयोग करते हैं: [१]

चुनौतीपूर्ण - लोगों को सुसमाचार के साथ चुनौती देना (प्रेरितों के काम २:३६ में पतरस)

बौद्धिक - तर्क के लिए अपील करना (प्रेरितों के काम १७:३ में पौलुस)

आमंत्रण - दूसरों को यीशु के विषय में सुनने के लिए आमंत्रित करना (यूहन्ना ४ में सामरी महिला)

सेवा - जरूरतमंदों की सहायता करना (प्रेरितों के काम ९ में दोरकास)

गवाही - यह बताना कि मसीह ने आपको कैसे बदला (यूहन्ना ९ में अंधा व्यक्ति)

संबंधपरक - उन लोगों के साथ सुसमाचार साझा करना जिनके साथ आपके संबंध हैं (मरकुस ५:१९ में पीड़ित व्यक्ति)

ध्यान दें: हमने गवाही देने की छह शैलियों की पहचान की है। हम सरलता से और भी अन्य की पहचान कर सकते हैं। मुख्य बात यह है कि हमें अपनी व्यक्तिगत शैली को समझने का प्रयास करना चाहिए और फिर उसे सुसमाचार प्रचार में लागू करना चाहिए। बहुत से लोग एक से अधिक शैलियों का उपयोग करने में सहज होंगे (विशेषकर यदि आप एक सुसमाचार प्रचारक हैं)।

१. चुनौतीपूर्ण शैली।

क. एक व्यक्ति जो चुनौतीपूर्ण शैली का उपयोग करता है वह साहसपूर्वक सुसमाचार के साथ लोगों का सामना करने में सक्षम होता है।

ख. जिन लोगों की शैली चुनौतीपूर्ण होती है उन्हें आमतौर पर एक सुसमाचार प्रचारक कहा जाता है।

टिप्पणियाँ -

२. बौद्धिक शैली।

क. एक व्यक्ति जो बौद्धिक शैली का उपयोग करता है वह शिक्षाओं पर बहस करने, दर्शन पर चर्चा करने, वैज्ञानिक प्रमाणों की बात,आदि करने में सक्षम होता है। वे एक बौद्धिक दृष्टिकोण से सुसमाचार पर चर्चा करने में सक्षम होते हैं।

ख. विश्वविद्यालयों, पेशेवर वातावरण और शिक्षित लोगों के बीच सुसमाचार प्रचार में इस प्रकार की शैली की बहुत आवश्यकता है।

३. आमंत्रण शैली।

क. एक व्यक्ति जो आमंत्रण शैली का उपयोग करता है, वह दूसरों को केवल उन जगहों पर आमंत्रित करता है जहाँ कोई व्यक्ति प्रभु के विषय बात कर रहा है।

ख. यह शैली दर्शाती है कि किसी व्यक्ति को सुसमाचार प्रचार के कार्य में कितना प्रभावी ढंग से उपयोग किया जा सकता है, भले ही व्यक्तिगत रूप से वे मसीह के विषय में बोलने या साझा करने का वरदान न पाए हों।

१) इसके लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जो अन्य लोगों की परवाह करता हो और जो दूसरों को मसीही सभाओं में भाग लेने में पर्याप्त रूप से सहज महसूस करने की अनुमति दे।

२) सुसमाचार प्रचार के फल की संभावना कई गुना बढ़ जाती है जब अनेक शैलियों के लोग एक साथ काम करते हैं, जैसे कि कोई दल जिसमें चुनौतीपूर्ण, आमंत्रण देने वाली या सेवा वाली शैलियाँ सम्मिलित हों। सुसमाचार प्रचार दल वाली सेवकाई होनी चाहिए!

४. सेवा शैली।

क. एक व्यक्ति जो सेवा करने की शैली का उपयोग करता है वह सेवा के उन कार्यों को करने में सक्षम होता है जो मसीह के चरित्र को दर्शाते हैं और इस प्रकार अविश्वासियों से अशाब्दिक रूप से बात करता है।

ख. सुसमाचार प्रचार की सेवकाई दल के लिए भी सेवा शैली बहुत पूरक है। इस वरदान वाले व्यक्ति को उस अवसर का वातावरण बनाने के लिए उपयोग किया जा सकता है जो सुसमाचार की प्रस्तुति की अनुमति देता है।

ग. अकसर, परमेश्वर एक विश्वासी को एक अविश्वासी की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अगुआई करेगा और वह सेवा बाद में अविश्वासी को प्रभु के विषय में जानने के लिए प्रेरित करती है। वही विश्वासी तब सुसमाचार को बाँटने में सक्षम होता है।

टिप्पणियाँ -

५. गवाही शैली।

क. एक व्यक्ति जो गवाही शैली का उपयोग करता है वह इस प्रकार से यह साझा करने में सक्षम होता है कि कैसे परमेश्वर ने उनके जीवन में कार्य किया है, जो सुसमाचार संदेश साझा करने की ओर ले जाता है।

ख. एक व्यक्तिगत गवाही अविश्वासियों तक पहुँचने का एकमात्र सबसे प्रभावी तरीका है।

१) परमेश्वर के साथ आपके व्यक्तिगत अनुभवों पर कोई विवाद नहीं कर सकता।

२) एक गवाही दूसरों को यह एहसास करने की अनुमति देती है कि परमेश्वर उनके जीवन में भी कार्य कर सकते हैं। लोग अन्य लोगों की कहानियों और जीवन से संबंधित होते हैं।

ग. प्रत्येक विश्वासी को अपनी व्यक्तिगत गवाही को एक अविश्वासी के साथ जोड़ने में सक्षम होना चाहिए।

१) यह पाठ्यक्रम आपको अपनी गवाही को प्रभावी ढंग से साझा करने हेतु सुसज्जित करने में सहायता करेगा।

२) मैत्री सुसमाचार प्रचार की सेवकाई में अपनी व्यक्तिगत गवाही को साझा करना महत्वपूर्ण है।

६. संबंधपरक शैली।

क. एक व्यक्ति जो संबंधपरक शैली का उपयोग करता है वह लोगों के साथ बहुत अच्छी रीति से संबंध स्थापित करने में सक्षम होता है और मसीह को साझा करने के लिए अपने संबंधों के दायरे में काम करता है।

ख. हमें अपने संबंधपरक दायरे में उन लोगों की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित करेंगे जिन्हें हम सुसमाचार से प्रभावित करने में सक्षम हो सकते हैं।

ग. यह शैली बहुत स्वतंत्र है क्योंकि इसमें हम अनजानों को गवाही देने के लिए मजबूर नहीं होते है। हम बस उन लोगों तक पहुँचने का प्रयास करते हैं जिनके साथ हमारे संबंध हैं।

चर्चा विषय

यह जानने के बाद कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति की अनूठी शैली का उपयोग सुसमाचार प्रचार के लिए किया जा सकता है, क्या अब आप स्वयं को एक सुसमाचार प्रचार दल के प्रयास का भाग बनते हुए देख सकते हैं?

विचारों पर चर्चा करने के लिए समय निकालें कि कैसे सुसमाचार प्रचार दल (अनेक शैलियों और वरदानों वाले लोगों के) आपके समुदाय में खोए हुए लोगों तक पहुँच सकते हैं।

घ. जीवनशैली के चार क्षेत्र जो आपकी गवाही देने की प्रभावशीलता को प्रभावित करते हैं।

टिप्पणियाँ -

लेखक की टिप्पणी:

एक सुसमाचार प्रचारक की प्रभावशीलता सीधे उनकी जीवन शैली से संबंधित होती है। ऐसे चार क्षेत्र हैं जो हमारी गवाही देने की प्रभावशीलता को बहुत प्रभावित करते हैं:

समय	-	क्या आप खोए हुए लोगों के साथ समय बिताने के लिए तैयार और उपलब्ध हैं (यूहन्ना १:१४)?
प्रेम	-	क्या आप दूसरों को परमेश्वर का प्रेम दिखाते हैं (मत्ती २२:३६-३९)?
अनुरूपता	-	क्या आपके कार्य आपकी बोली बातों के अनुरूप हैं (१ थिस्स. १:६)?
एकता	-	क्या आप अन्य मसीहियों के साथ मेल से रहते हैं (अपनी पूरी क्षमता अनुसार) और उनके विषय में अच्छा बोलते हैं (यूह. १६:२३)?

१. समय।

क. खोए हुए और जरूरतमंद लोगों के साथ समय बिताना, उनकी पहचान करना, या उनके बीच रहने को धारण करने की सेवकाई कहा जाता है।

१) अपने देहधारण में, परमेश्वर यीशु मसीह के रूप में एक मनुष्य बन गए (यूह. १:१४; इब्रा. १:१)।

२) यीशु के नामों में से एक इम्मानुएल है, जिसका अर्थ है "परमेश्वर हमारे साथ" (यशा. ७:१४; मत्ती १:२३)।

३) अपनी सेवकाई में, यीशु खोए हुओं के बीच रहे। उन्होंने उनके साथ पहचान की। उन्होंने खोए हुए लोगों के साथ समय बिताया।

चर्चा विषय

यूहन्ना अध्याय ४ का सुसमाचार प्रचार सेवकाई के एक प्रतिमान के रूप में अध्ययन करें (जहाँ ध्यान उन लोगों के साथ समय बिताने पर केंद्रित है जिन्हें मसीह की आवश्यकता है)। इस सेवकाई जीवन शैली के विषय में अपने कुछ अवलोकनों पर चर्चा करें और उन्हें सूचीबद्ध करें।

टिप्पणियाँ -

ख. आपको खोए हुए आहत लोगों के साथ समय बिताने के लिए तैयार रहना चाहिए, यदि आप उन्हें मैत्री सुसमाचार प्रचार के माध्यम से मसीह तक ले जाने की आशा करते हैं।

१) लोगों को समय देकर, आप उनका भरोसा जीतेंगे और अंततः उनके बीच सेवा करने में सक्षम होंगे।

२) अपना समय दिए बिना लोगों को प्रचार करना घमंड, अहंकार या ठंडेपन का संचार कर सकता है।

ग. यदि आपका जीवन इतना व्यस्त है कि आपके पास लोगों के लिए बहुत कम या बिल्कुल समय नहीं है, तो आप मैत्री सुसमाचार प्रचार में प्रभावी नहीं होंगे (और संभवतः आपकी प्राथमिकताएँ असंतुलित हो गई हैं)।

१) जो हमारे लिए महत्वपूर्ण है उसके लिए हम सभी समय निकालते हैं। यदि आप वास्तव में कुछ करना चाहते हैं, तो आप कैसे भी उसके लिए समय निकालने का प्रयास करेंगे।

२) अपने समय का एक बेहतर प्रबंधक बनना हमें सेवकाई के लिए स्वतंत्रता देगा।

घ. मैत्री सुसमाचार प्रचार के लिए अपने समय का उपयोग करने के कई रचनात्मक तरीके हैं।

१) एक मित्र के साथ सार्वजनिक स्थानों पर जाकर लोगों से मिल कर सुसमाचार बाँटें।

२) पड़ोसियों, मित्रों, या खोए हुए परिवार के सदस्यों को अपने घर पर आमंत्रित करें।

३) पड़ोसियों की उनके घर के आसपास की परियोजनाओं में सहायता करें।

४) खोए हुए लोगों के साथ मनोरंजक या सामाजिक समय बिताएँ।

५) किसी जरूरतमंद का सेवक बनें। वे आपके लिए खुलेंगे।

६) किसी व्यक्ति की उसके घर में आने या जाने के समय पर सहायता करें।

७) एक सुसमाचार सम्बंधित बाइबल अध्ययन की अगुआई करें।

८) बंदीगृह, अस्पतालों, नर्सिंग होम आदि में लोगों से मिलने जाएँ।

९) खोए हुए सहकर्मियों के साथ अपने संबंध विकसित करें।

टिप्पणियाँ -

२. प्रेम।

सुसमाचार प्रचार प्रेम संबंधों से प्रेरित है:

यह पूछे जाने पर कि सबसे बड़ी आज्ञा क्या है, यीशु ने उत्तर दिया:

"अपने प्रभु परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण हृदय, सम्पूर्ण प्राण और सम्पूर्ण बुद्धि से प्रेम करो।' यह सब से बड़ी और पहली आज्ञा है। दूसरी आज्ञा इसी के सदृश है : 'अपने पड़ोसी को अपने समान प्रेम करो।' इन्हीं दो आज्ञाओं पर समस्त व्यवस्था और नबियों की शिक्षा अवलम्बित है।" (मत्ती **२२:३६-३९**; मरकुस **१२:२८-३४**)।

क. परमेश्वर के साथ हमारा प्रेम संबंध हमें सुसमाचार प्रचार के लिए सशक्त करता है।

१) हमें पाप से शुद्ध किया जाता है, जो अन्यथा हमें रोकता है।

२) परमेश्वर के साथ संगती हमें उनकी सामर्थ और बुद्धि से भर देती है।

३) परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदय में डल जाता है, जिससे हम खोए हुओं के लिए तरस से भर जाते हैं।

४) पवित्र आत्मा हमें फलदायी सुसमाचार प्रचार के लिए अंतर्दृष्टि प्रदान करेंगे।

५) हम दूसरों को परमेश्वर के प्रेम के विषय में बताने हेतु विवश हैं।

६) परमेश्वर की उपस्थिति हमें विनम्र और उपयोगी रखती है।

ख. दूसरों के प्रति परमेश्वर के प्रेम को व्यक्त करना प्रभावी सुसमाचार प्रचार की कुंजी है।

१) परमेश्वर हमारे खोए हुए पड़ोसियों तक पहुँचने के लिए हमारा उपयोग करेंगे।

२) परमेश्वर की वास्तविकता हमारे जीवन में दिखाई देती है।

३) परमेश्वर का प्रेम पापी हृदयों को तोड़ता है और कायल करता है।

४) खोए हुए लोग परमेश्वर की दी हुई इस प्रेम की अभिव्यक्ति का प्रत्युत्तर देते हैं।

चर्चा विषय

क्या आप अपने जानने वाले खोए हुए लोगों के लिए प्रेम और तरस की भावना महसूस करते हैं? यदि नहीं, तो हृदय परिवर्तन के लिए परमेश्वर की खोज करें और उन्हें खोए हुए लोगों के लिए आपको अपना प्रेम देने के लिए कहें।

यदि अक्षमा की दीवार है जो आपको दूसरों से प्रेम करने से रोक रही है, तो प्रार्थना करने के लिए समय निकालें कि परमेश्वर उस व्यक्ति या घटना को आपके दिल से मुक्त कर दें।

टिप्पणियाँ -

३. अनुरूपता।

क. सुसमाचार प्रचारक का जीवन शैली व्यवहार या तो उनकी बोली गई बातों की पुष्टि करता है या उनका खंडन करता है।

१) यदि हम अपनी जीवन शैली में निरन्तर परमेश्वर के सिद्धांतों का प्रदर्शन करते हैं, तो लोग हमारी सुसमाचार की घोषणा के द्वारा परमेश्वर की ओर आकर्षित होंगे।

२) यदि हमारा व्यवहार हमारी बोली हुई बातों का खंडन करता है, तो लोग हमें पाखंडी के रूप में देखेंगे और सोचेंगे कि हम जो बोलते हैं वह झूठ है। अकसर, वे इस विरोधाभास के कारण परमेश्वर से दूर हो जाएंगे।

ख. यदि हमारी जीवन शैली सुसमाचार के तीन तत्वों में से एक या दो को दिखाती है, तो हम पूरी रीति से सुसमाचार को प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं। हमें ऐसा जीवन जीना चाहिए जो मसीह के चरित्र के अनुरूप हो।

चर्चा विषय

क्या आपका जीवनशैली व्यवहार आपकी बोली गई बातों के अनुरूप है? कुछ प्रमुख और छोटे तरीकों पर चर्चा करें जिनसे हम अकसर अपने संदेश का खंडन करते हैं। हमारे संदेश को अंततः नष्ट करने में कितने छोटे-छोटे विरोधाभास लगते हैं?

४. एकता।

क. यीशु ने सुसमाचार प्रचार के लिए एकता का आवश्यक होने पर ज़ोर दिया।

१) अपनी गिरफ्तारी और मुकदमे से पहले, यीशु ने चेलों और सभी विश्वासियों के लिए उत्साहपूर्वक प्रार्थना की। चार बार, उन्होंने उनके लिए एकता में रहने के लिए प्रार्थना की (देखें यूह. १७:६-२६)।

क) उन्होंने चेलों (अगुवों) के लिए प्रार्थना की, "जिससे वे एक हों जैसे हम एक हैं।" (यूहन्ना १७:११)।

ख) उन्होंने उन लोगों के लिए प्रार्थना की जो शिष्यों या अगुवों के द्वारा विश्वास करेंगे, "कि वे सब एक हों" (यूहन्ना १७:२१)।

ग) फिर से, उन्होंने प्रार्थना की "कि जैसे हम एक हैं वैसे ही वे भी एक हों" (यूहन्ना १७:२२)।

घ) अंत में, उन्होंने प्रार्थना की, "वे पूर्ण एकता में लाए जाएं" (यूहन्ना १७:२३)।

टिप्पणियाँ -

२) यीशु ने विशेष रूप से उनकी एकता के उद्देश्य को बताया, "जिससे संसार जाने कि तू ने मुझे भेजा है" (यूहन्ना १७:२१, २३)।

ख. एकता सुसमाचार प्रचारक के जीवन का एक मुख्य पहलू है।

१) एकता उस धागे के समान है जो समय, प्रेम और निरंतरता के अन्य पहलुओं को एक साथ सिलती है। यह उन्हें एक पूर्ण वस्त्र के रूप में जोड़ती है।

२) एकता प्रचारक को एक शक्तिशाली गवाही उपकरण देती है। जब मसीही एकता में एक साथ आते हैं तो परमेश्वर आत्मिक सामर्थ और प्रभाव को कई गुना बढ़ा देते हैं (व्यव. ३२:३०; यूह. १७:२३)।

३) जब अविश्वासी मसीहियों को एकता में देखते हैं, तो वे कई संभावित बाधाओं: सांस्कृतिक, जातीय, सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सैद्धांतिक को पार करते हुए, मानव जीवन में काम करते हुए परमेश्वर की परिवर्तनकारी सामर्थ को महसूस करते हैं।

४) जब अविश्वासी मसीहियों को एकता में होते नहीं देखते, तो वे सोचते हैं कि मसीही पाखंडी हैं और उन्हें व्यक्तिगत रूप से मसीह की आवश्यकता नहीं है।

क) वे मसीहियों और स्वयं के बीच कोई अंतर नहीं देखते हैं।

ख) वे उस विरोधाभास को पहचानते हैं कि मसीहियत कैसी होनी मानी जाती है।

ग) वे विभिन्न मसीहियों से असंगत संदेश प्राप्त करते हैं, फिर भ्रमित हो जाते हैं कि क्या विश्वास किया जाए।

घ) वे शिक्षा की लड़ाई तो बिल्कुल नहीं समझते हैं। वे केवल समझौते और प्रेम को कठोरता और संघर्ष के साथ बदलते हुए देखते हैं।

टिप्पणियाँ -

ङ. अपनी व्यक्तिगत गवाही तैयार करना।

लेखक की टिप्पणी:

प्रत्येक मसीही की एक व्यक्तिगत गवाही है। यह परमेश्वर के साथ आपके व्यक्तिगत अनुभव की कहानी है। गवाही देने के लिए आपके पास आपकी अपनी गवाही सबसे प्रभावी उपकरण है (भले ही आप बचपन से ही मसीही रहे हों)। अभी अपनी गवाही के विषय में सोचने और तैयारी करने से, अवसर आने पर आप उसे साझा करने के लिए तैयार होंगे।

आपकी गवाही में तीन भाग होते हैं:

१. मसीह से पहले आपका जीवन कैसा था?

२. आप मसीह से कैसे मिले?

३. मसीह के साथ आपका जीवन कैसा है?

१. मसीह से पहले आपका जीवन कैसा था?

क. आपकी गवाही का यह भाग मसीह की आपकी आवश्यकता का संचार करता है। यह उन स्थितियों से संबंधित होना चाहिए जिन्होंने आपको सुसमाचार प्राप्त करने के लिए तैयार किया।

ख. निस्संदेह संसार में कोई न कोई ऐसा होगा जो विशेष रूप से आपके जीवन की स्थिति जैसी स्थिति में होगा। इस प्रकार, आपकी गवाही उन्हें प्रभावित करेगी।

१) यह सच होगा, भले ही आप एक मसीही के रूप में पले-बढ़े हों और आपने किसी बड़े पाप या विद्रोह का अनुभव नहीं किया हो।

२) ऐसे लोग होंगे जिन्हें यह सुनने की आवश्यकता होगी कि परमेश्वर कम आयु में या गहरे पापों का अनुभव किए बिना किसी व्यक्ति के जीवन में कैसे कार्य कर सकते है।

२. आप मसीह से कैसे मिले?

क. आपने मसीह को कैसे जाना, इसकी विशिष्टताओं को साझा करें।

१) यह अविश्वासियों को स्पष्ट करने में सहायता करेगा कि मसीही बनने का क्या अर्थ है और यह उनके लिए कैसे हो सकता है।

२) यह किसी के जीवन की स्थिति से भी संबंधित हो सकता है।

ख. इस भाग को बहुत ध्यान केंद्रित और स्पष्ट रखने का प्रयास करें ताकि बातों को गलत न समझा जाए।

३. मसीह के साथ आपका जीवन कैसा है?

क. आपकी गवाही के इस भाग से संचार होना चाहिए कि कैसे मसीह अभी आपके जीवन में कार्य कर रहे हैं।

ख. सच्चे और ईमानदार हों।

१) यह सुझाव देने का प्रयास न करें कि एक मसीही के रूप में आपको कोई समस्या नहीं है।

२) बल्कि बताएँ कि कैसे मसीह आपको आपकी समस्याओं का सामना करने की सामर्थ देते हैं।

३) फिर भी, यह साझा करना उचित है कि कैसे मसीह आपके लिए सफलता, विजय, आशा, शांति, आनंद, पूर्ति, आदि लाए हैं।

आपकी गवाही बाँटने के लिए सुझाव:

१. उसे संक्षिप्त रखें (दो मिनट या उससे कम), अन्यथा गैर-मसीही नहीं सुनेंगे।

२. किसी भी कलीसिया या धार्मिक सम्बंधित शब्द को हटा दें (गैर-मसीही उनसे संबंधित नहीं हैं)।

३. अनावश्यक तथ्यों या विवरणों से बचें जो आवश्यक बिंदुओं से ध्यान हटाएंगे।

४. अपने गहरे पापों को विस्तार से मत समझाएँ (यही सब कुछ स्मरण रहेगा)।

५. अपने व्यक्तिगत विचारों, भावनाओं, मनोभाव, डर, आदि को साझा करें। (वे प्रभावित कर रहे हैं!)।

६. बताएँ कि कैसे यीशु ने आपके जीवन को छुआ है (यह किसी की स्थिति से संबंधित हो सकता है)।

७. तब तक अभ्यास करें जब तक आप इसे स्मृति द्वारा सरलता से न बता सकें (तब आप लचीले हो सकते हैं और अलग-अलग स्थितियों के लिए समायोजित हो सकते हैं)।

ध्यान दें: व्यक्तिगत गवाही के उदाहरणों के लिए परिशिष्ट क३ देखें।

एक व्यावहारिक अभ्यास:

अपने विचारों पर ध्यान केंद्रित करने और आपको बेहतर संवाद करने में सक्षम बनाने के लिए कागज पर अपनी गवाही लिखें। इसका उपयोग सुसमाचार को साझा करने हेतु एक व्यक्तिगत/पारिवारिक पुस्तिका बनाने के लिए किया जा सकता है। (पारिवारिक पुस्तिका के उदाहरण के लिए परिशिष्ट क४ देखें)

टिप्पणियाँ -

अपनी गवाही लिखना

१) मसीह से पहले आपका जीवन कैसा था?

२) आप मसीह से कैसे मिले?

३) मसीह के साथ आपका जीवन कैसा है?

चर्चा विषय

सभी को अपनी व्यक्तिगत गवाही लिखने का समय दें। यदि संभव हो, तो प्रत्येक को अपनी गवाही दूसरों के साथ साझा करने दें। दूसरों को प्रत्येक प्रस्तुत गवाही की ताकत और कमजोरियों पर प्रतिक्रिया देने दें। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी गवाही को बाँटने के लिए उनके कौशल को लगातार सुधारने और तेज करने के लिए प्रोत्साहित करें।

V. सुसमाचार में सम्मिलित हैं: सुसमाचार के तरीके (सामर्थ)।

टिप्पणियाँ -

लेखक की टिप्पणी:

निम्नलिखित प्रक्रिया मैत्री सुसमाचार प्रचार में सम्मिलित सामान्य बहाव का वर्णन करती है। यह एक विधिसम्मत सूत्र होने के लिए नहीं है, बल्कि सुसमाचार प्रचार में वास्तविक परिणामों की अपेक्षा करने का मात्र एक प्रतिमान है। प्रत्येक चरण को विस्तार से प्रस्तुत किया जाएगा।

मैत्री सुसमाचार प्रचार प्रक्रिया:

१. पवित्र आत्मा पर भरोसा रखें

२. उन लोगों को पहचाने जिन तक आप पहुँच सकते हैं

३. अपना जीवन साझा करें

४. अपनी गवाही बाँटें

५. सुसमाचार प्रचार करें

६. प्रतिक्रिया को आमंत्रित करें

७. स्थिति का मूल्यांकन करें:

ग्रहण करने के लिए तैयार ↓	तैयार नहीं ↓	अस्वीकार या टालना ↓
८. उनके साथ प्रार्थना करें	८. धैर्य रखें	८. विनम्र रहें
९. मिलकर आनंद मनाएँ	९. स्मरण रखें	९. संघर्ष से बचें
१०. आगे की कार्यवाई	१०. संपर्क में रहें	१०. निश्चिंत रहें

टिप्पणियाँ -

क. परमेश्वर के आत्मा की सामर्थ।

लेखक की टिप्पणी:

परमेश्वर के सुसमाचार प्रचार के तरीके पवित्र आत्मा की सामर्थ पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह पवित्र आत्मा हैं जो इस संदेश को प्राप्त करने के लिए परमेश्वर द्वारा तैयार किए गए लोगों को सुसमाचार प्रचार करने हेतु हमें सशक्त और अभिषेक करते हैं।

हमें सुसमाचार प्रचार के लिए पूरी रीति से सुसज्जित होने हेतु हर संभव प्रयास करना चाहिए। फिर भी, हमें स्वयं को स्मरण दिलाना चाहिए कि सुसमाचार प्रचार एक मानव निर्मित प्रयास नहीं है और ऐसी कोई तकनीक नहीं है जिसे सुनिश्चित परिणामों के लिए सिद्ध किया जा सके। हमें पवित्र आत्मा से भरना चाहिए और पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन के प्रति संवेदनशील होना सीखना चाहिए, ताकि हम सुसमाचार प्रचार में परमेश्वर की सामर्थ के प्रवाह में चल सकें।

पवित्र आत्मा गतिविधि के प्रभारी हैं। हम केवल परमेश्वर के उद्देश्य के साधन हैं। हमें यह दृष्टिकोण रखना चाहिए।

१. अविश्वासी तक पहुँचने के लिए पवित्र आत्मा की सामर्थ एक कुँजी हैं।

क. एक अविश्वासी को संदेश प्राप्त करने के लिए तैयार करने हेतु पवित्र आत्मा सुसमाचार प्रचारक के आगे-आगे जाते हैं।

ख. पवित्र आत्मा अविश्वासी को सन्देश को समझने में सक्षम बनाते हैं (२ कुरि. ४:३,४)।

ग. परमेश्वर के आत्मा लोगों को सच्चाई के प्रति कायल करते हैं (प्रेरितों के काम २:३७)।

घ. पवित्र आत्मा मानव हृदयों को बदलते हैं और लोगों को पश्चाताप करने और मसीह की ओर फिरने के लिए प्रेरित करते हैं (लूका १५:१८)।

२. पवित्र आत्मा परमेश्वर की उपस्थिति को प्रकट करने की कुंजी हैं।

क. सुसमाचार प्रचार के दौरान परमेश्वर की वास्तविकता को प्रदर्शित करने के लिए पवित्र आत्मा अकसर अलौकिक गतिविधि करेंगे।

ख. कई चिन्ह और चमत्कार अकसर सुसमाचार प्रचार प्रयासों के साथ होते हैं, विशेष रूप से उन जगहों पर जहाँ एक शक्तिशाली आत्मिक सफलता की आवश्यकता होती है।

टिप्पणियाँ -

३. पवित्र आत्मा की सामर्थ विश्वासी को सुसमाचार प्रचार के लिए सशक्त बनाने और मार्गदर्शन करने की कुंजी है।

क. हमें सुसमाचार की घोषणा करने और एक जीवंत उदाहरण बनने के लिए परमेश्वर के आत्मा से परिपूर्ण होना चाहिए (प्रेरितों के काम १:८)।

ख. हमें सीखना चाहिए कि परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए कैसे पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित किए जाएँ (प्रेरितों के काम ५:३२, १ कुरिं. ६:१९,२०, लूका ४:१८.१९)।

१) हम अधिक फल का अनुभव करेंगे जब हम उससे जुड़ते हैं, जो परमेश्वर कर रहे हैं (हमारे अपने प्रयासों के बजाय)।

२) यह उन लोगों तक आँख बंद करके पहुँचने की निराशा से बचने में सहायता करेगा, जिन्हें परमेश्वर संदेश प्राप्त करने के लिए तैयार नहीं कर रहे हैं।

३) हम अपनी ऊर्जा को विशिष्ट तरीकों पर केंद्रित करते हुए अपने समय और प्रयास को अधिकतम कर सकते हैं।

४) पवित्र आत्मा द्वारा निर्देशित होना सीखना एक प्रक्रिया है जो समय के साथ विकसित होती है। इसमें अभ्यास की आवश्यकता होती है और इसमें आमतौर पर छोटे नियत कार्यों का पालन करना सम्मिलित होता है, जो अंततः बड़े नियत कार्यों की ओर ले जाएगा।

ख. मैत्री सुसमाचार प्रचार प्रक्रिया।

१.पवित्र आत्मा पर निर्भर हों।

लेखक की टिप्पणी:
इसने सुझाव दिया कि आप पवित्र आत्मा पर निर्भर होने के साधन के रूप में निम्नलिखित चार अवधारणाओं के माध्यम से संक्षेप में प्रार्थना करने के लिए प्रतिदिन समय निकालें।

क. अलग हो जाओ (प्रेरितों के काम १३:२)।

१) हमें अपने स्वयं के कार्यक्रम से अलग होना चाहिए और परमेश्वर को उनके उद्देश्य को पूरा करने के लिए स्वयं को अलग करना चाहिए।

२) यह उन लोगों के लिए बहुत कठिन है जो अभी तक यह नहीं जानते कि परमेश्वर पर कैसे भरोसा किया जाए। हमें नियंत्रण छोड़ देना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

ख. निश्चिंत हों (प्रेरितों के काम १६:६, १ कुरिं. ३:६-९)।

१) निश्चिंत हों कि परमेश्वर आपकी अगुवाई करना चाहते हैं।

२) वह हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि हम उन्हें अपने जीवन की अगुआई करने दें। वह इस विषय में हमसे अधिक परवाह करते हैं।

ग. आत्मत्याग करें (लूका ९:२३, यूहन्ना १२:२२-२४)।

१) हमें अपनी क्षमताओं और आत्म-निर्भरता से स्वयं का आत्मत्याग कर लेना चाहिए। हमें परमेश्वर को अपने भीतर से बहने देना चाहिए।

२) अभिमानी सोच से पश्चाताप करें और परमेश्वर पर अपनी पूर्ण निर्भरता को स्वीकार करें। विनम्रता और टूटने की खोज करें।

घ. भर जाएँ (प्रेरितों के काम १:८)।

१) प्रतिदिन एक ताजा सशक्तिकरण माँगकर पवित्र आत्मा से भरे रहें।

२) परमेश्वर से उन लोगों से संबंधित विशिष्ट अभिषेक माँगे, जिन तक आप सुसमाचार के साथ पहुँचने की आशा रखते हैं।

३) पवित्र आत्मा के लिए संवेदनशील हों और तैयार रहें कि वह आपको सुसमाचार प्रचार के लिए किसी की ओर निर्देशित करें।

लेखक की टिप्पणी:

प्रार्थना में पवित्र आत्मा के साथ समय बिताने के बाद, प्रतिदिन आगे बढ़ें ताकि प्रभु सुसमाचार प्रचार में अलौकिक नियुक्तियाँ कर सकें। अपेक्षा करें कि परमेश्वर आपके लिए अवसर लाना आरम्भ कर देंगे। तैयार रहें!

२. उन लोगों की पहचान करें जिन तक आप पहुँच सकते हैं।

क. वे रिश्तेदार, मित्र, पड़ोसी, सहकर्मी, सहपाठी, आदि कौन हैं, जिनके साथ आपका व्यक्तिगत संपर्क है और जो मसीह को नहीं जानते हैं।

ख. उनके नाम लिखें और नियमित रूप से उनके उद्धार के लिए प्रार्थना करें।

ग. सुसमाचार प्रचार के अवसरों के संबंध में पवित्र आत्मा से विशिष्ट मार्गदर्शन माँगें।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

एक छोटा समूह (या अपनी कलीसिया के भीतर सेल ग्रुप) बनाने पर विचार करें जो निरंतर मैत्री सुसमाचार प्रचार पर ध्यान केंद्रित करता है। दल में विभिन्न शैलियों और वरदानों वाले लोगों के विविध समूह को सम्मिलित करना चाहिए। इन मित्रों, रिश्तेदारों, सहकर्मियों आदि के लिए एक समूह के रूप में प्रार्थना करें, जिन तक आप पहुँचने का प्रयास कर रहे हैं।
उन तक पहुँचने के रचनात्मक तरीकों के लिए पवित्र आत्मा की ओर ताकें। इन लोगों तक पहुँचने के कुछ तरीकों पर चर्चा करें।

३. अविश्वासियों के साथ अपने जीवन को बाँटें।

क. अपना समय बाँटें (यूहन्ना १:१४)।

१) गैर-मसीहियों के लिए उपलब्ध रहें।

२) पहले से उनके साथ बिताने वाले समय को अनुमति दें।

चर्चा विषय

जिस प्रकार प्रत्येक विश्वासी की एक अनूठी शैली और वरदानों का संग्रह होता है, प्रत्येक अविश्वासी अलग होता है और विभिन्न माध्यमों से उस तक पहुँचा जा सकता है।

चर्चा करें कि निम्नलिखित में से प्रत्येक व्यक्ति से कैसे संपर्क किया जा सकता है:

- परिवार के सदस्य
- करीबी मित्र (यूहन्ना १:४५,४६)
- जो लोग आत्मिक सत्य में रुचि रखते हैं (प्रेरितों के काम १६:१९-३४)
- अजनबी (यूहन्ना ४:७-२६)
- धार्मिक लोग जो मसीह को नहीं जानते (प्रेरितों के काम ८:२६-३०)

निम्नलिखित चर आपके दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करते हैं:

- आपका पहले से ही घनिष्ठ संबंध है
- अविश्वासी अतीत के दुखों के कारण कड़वा है
- अविश्वासी के पास परमेश्वर के विषय में बहुत कम ज्ञान है
- पवित्र आत्मा दृढ़ता से आपको एक निश्चित व्यक्ति की ओर ले जा रहे हैं
- आप संकट की स्थिति में हैं

टिप्पणियाँ -

ख. ध्यान दें (याकूब १:१४)।

१) उनकी भावनाओं, चिंताओं, समस्याओं के विषय में कोमलता से प्रश्न पूछें। अधिकतर लोग एक सच्चा मित्र चाहते हैं।

२) अच्छा सुनने वाला बनें। अपने सुनने के गुण का विकास करें और पूरा ध्यान दें।

ग. दास बनें (मत्ती २२:३७-३९)।

१) आपके सामने आने वाली आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए तैयार रहें।

२) यह मसीह के विषय में बाँटने या प्रभु के विषय में बात करने की ओर ले जा सकता है।

चर्चा विषय

आप एक अविश्वासी के साथ अपना जीवन बाँटने से उनके साथ अपनी गवाही बाँटने की ओर कैसे परिवर्तित होते हैं? आप उसे कैसे सामने लाते हैं?

सुझाव:

- उनकी बताई गई समस्याओं या राय को ध्यान से सुनें, फिर जब आपकी राय पूछी जाए या मौका दिया जाए तो प्रत्युत्तर दें। सुनना गंभीर बात है।
- अपने जीवन और उनकी स्थिति में समानता को खोजें। दिखाएँ कि कैसे मसीह ने आपकी सहायता की।
- प्रश्न पूछकर आरम्भ करें, "आपको बुरा तो नहीं लगेगा यदि मैंने आपको बताऊँ कि जब मुझे यह समस्या थी तो परमेश्वर ने मेरे जीवन में कैसे काम किया था?"

४. अपनी व्यक्तिगत गवाही को बाँटें (दो मिनट के भीतर)।

क. अपनी गवाही को सादे ढंग से बाँटें, जिसे आपने पहले विकसित और अभ्यास किया है।

१) मसीह के पहले आपका जीवन।

२) आप मसीह के पास कैसे आए।

३) मसीह के साथ आपका जीवन।

टिप्पणियाँ -

ख. आप उपलब्ध समय और परिस्थिति के आधार पर विस्तार को और अधिक बढ़ाने में सक्षम हो सकते हैं।

ग. अपनी गवाही को विभिन्न श्रोताओं के अनुकूल बनाने के लिए तैयार रहें।

चर्चा विषय

आप अपनी गवाही बाँटने से सुसमाचार बाँटने की ओर कैसे बदलते हैं? (स्मरण रखें: आपकी गवाही सुसमाचार नहीं है। वह केवल सुसमाचार बाँटने की तैयारी है।)

सुझाव:

- इसके प्रति संवेदनशील रहें कि व्यक्ति कैसे प्रतिक्रिया दे रहा है
- पवित्र आत्मा के नेतृत्व में रहें, फिर बातचीत को चलाएँ
- उनसे एक प्रश्न पूछकर आगे की बात आरम्भ करें, "क्या मैं आपको बता सकता हूँ कि मैंने मसीह को कैसे जाना या मैं क्या मैं आपको समझा सकता हूँ कि आप मसीही कैसे बन सकते हैं?", आदि।

५. सुसमाचार प्रचार करें।

क. हमारे द्वारा सीखी गई सुसमाचार की पाँच अवधारणाओं को साझा करें:

१) परमेश्वर का प्रेम (यूहन्ना ३:१६)।

२) हमारी समस्या (रोमि. ३:२३)।

३) परिणाम (रोमि. ६:२३)।

४) परमेश्वर का प्रावधान (रोमि. ५:८)।

५) हमारी प्रतिक्रिया (प्रेरितों के काम ३:१९)।

ख. पाँच अवधारणाओं और उनके बाइबल पद्यों को याद करें।

१) इन्हें याद कर लेने के द्वारा, आप व्यक्ति को देखते हुए उस पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, बजाय इसके कि आप एक कागज़ के टुकड़े को देखें या अपनी बाइबल के पन्ने पलटें।

२) यह इस नकारात्मक रूप को भी रोकेगा कि आप एक डिब्बाबंद प्रस्तुति दे रहे हैं, जिससे उन्हें यह महसूस हो सकता है कि आप एक व्यक्ति के रूप में उनकी परवाह नहीं करते हैं।

टिप्पणियाँ -

३) यह आपको अधिक प्राकृतिक और तनावमुक्त रहने देगा।

४) यह आपको व्यक्ति की प्रतिक्रिया को परखने और प्रत्युत्तर देने के लिए भी मुक्त करता है।

ग. बाइबल का प्रभावशाली ढंग से उपयोग कीजिए।

१) अपने साथ जेब में आने वाला एक नया नियम ले जाएँ (बड़ी बाइबल के बजाय)।

२) वचन के पाँच पद्यों को चिह्नित करें ताकि आप उन्हें सरलता से निकाल सकें। (टैब का प्रयोग करें और पाँचों टैब पर १-५ क्रम लिखें)।

३) व्यक्ति को प्रत्येक पद्य को देखने दें, भले ही आप बोलते समय उन्हें देख रहे हों।

४) छोटी बाइबल उस व्यक्ति के लिए एक उपहार बन सकती है यदि आप पवित्र आत्मा द्वारा उसे देने के लिए अगुआई महसूस करते हैं।

घ. व्यक्तिगत पुस्तिका का प्रभावी ढंग से उपयोग करें।

१) आप सुसमाचार प्रचार के लिए अपनी व्यक्तिगत पुस्तिका बना सकते हैं। यह एक सामान्य पुस्तिका की तुलना में अधिक प्रभावी है।

२) उसके सामने अपना चित्र या अपने परिवार का चित्र लगाएँ।

३) उसमें अपनी लिखित गवाही डालें।

४) उसमें सुसमाचार की पाँच अवधारणाएँ और वचन पद्य डालें।

५) पुस्तिका व्यक्ति को देनी चाहिए। उसे बाद में देखा जा सकता है और वह बाद में उन्हें प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित कर सकती है (एक उदाहरण परिशिष्ट क४ में देखा जा सकता है)।

चर्चा विषय

एक बार जब अपने सुसमाचार सुना दिया, तो क्या आवश्यक है कि आप उस व्यक्ति को प्रतिक्रिया देने के लिए आमंत्रित करें? हाँ! प्रत्येक व्यक्ति को यह जानना आवश्यक है कि सुसमाचार को प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है। हालाँकि, प्रतिक्रिया पूरी रीति से उनका निर्णय है।

प्रतिक्रिया आमंत्रित करने से पहले, कुछ स्थितियों पर चर्चा करें जो आपके द्वारा अभी-अभी सुसमाचार सुनाने के बाद हो सकती हैं।

टिप्पणियाँ -

६. प्रतिक्रिया आमंत्रित करें।

क. रुकावटों का सामना करें।

१) मानव स्वभाव अधिकांश लोगों का निर्णय लेने से बचने का कारण बनेगा। जो कोई भी सुसमाचार को सुनता है उसे स्पष्ट रूप से यह समझना चाहिए कि सुसमाचार को प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है।

२) हमारा आत्मिक शत्रु व्यक्ति को प्रतिक्रिया देने से रोकने के लिए ध्यान भटकाने और रुकावटें पैदा करने का प्रयास करेगा।

ख. ध्यान केंद्रित रखें।

१) कोमल, परन्तु ध्यान केंद्रित और प्रत्यक्ष रहें।

२) यह एक अनंत क्षण है जहाँ कोई व्यक्ति मृत्यु से जीवन में आ सकता है।

ग. आत्मिक युद्ध से अवगत रहें।

१) शत्रु की आत्मिक शक्तियों को आपके विरुद्ध आने की अपेक्षा करें।

२) यदि एक से अधिक मसीही उपस्थित है, तो उन्हें चुपचाप प्रार्थना और मध्यस्थता करनी चाहिए।

चर्चा विषय

सुसमाचार सुनाने के बाद आप प्रतिक्रिया को कैसे आमंत्रित करते हैं?

सुझाव:

- प्रश्न पूछें:

"क्या अब आप मेरे साथ मसीह को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करना चाहेंगे?"
"क्या अब आप मसीह को ग्रहण करने के लिए तैयार हैं?"
"क्या आपका प्रभु के साथ संबंध है?"
"क्या यह आपके लिए एक नई अवधारणा है?"
"क्या आपने यह पहले कभी सुना है?"

कुछ संभावित स्थितियों पर चर्चा करें जो सुसमाचार की प्रतिक्रिया देने के लिए निमंत्रण देते समय हो सकती हैं।

टिप्पणियाँ -

७. स्थिति का मूल्यांकन करें (जैसा कि पवित्र आत्मा अगुआई करते हैं)।

लेखक की टिप्पणी:

संभावित प्रतिक्रियाओं की एक विस्तृत श्रृंखला है जो आपके द्वारा लोगों को सुसमाचार सुनाने के बाद उनके पास होगी। हालाँकि, अधिकांश प्रतिक्रियाएँ तीन श्रेणियों में आती हैं:

- ग्रहण करने के लिए तैयार
- तैयार नहीं
- अस्वीकार/टालना

आपके लिए उनकी प्रतिक्रिया का मूल्यांकन करना महत्वपूर्ण है, क्योंकि आप प्रत्येक प्रकार की प्रतिक्रिया के लिए अलग-अलग तरीके से आगे बढ़ेंगे।

संभावित प्रतिक्रियाएँ

ग्रहण करने को तैयार	तैयार नहीं	अस्वीकार या टालना
↓	↓	↓
८. उनके साथ प्रार्थना करें	८. धैर्य रखें	८. विनम्र रहें
९. मिलकर आनंद मनाएँ	९. स्मरण रखें	९. संघर्ष से बचें
१०. आगे की कार्यवाई	१०. संपर्क में रहें	१०. निश्चिंत रहें

टिप्पणी:

सुसमाचार बाँटने के बाद, हमें उस व्यक्ति की प्रतिक्रिया के आधार पर अलग ढंग से आगे बढ़ना चाहिए जिसे हमने गवाही दी है। अब हम प्रत्येक क्षेत्र पर विस्तार से विचार करेंगे।

यदि प्रतिक्रिया है - <u>ग्रहण करने के लिए तैयार</u>:

टिप्पणियाँ -

८. उनके साथ प्रार्थना करें।

क. यह चाहत की गई प्रतिक्रिया है। अब समय आ गया है कि उस व्यक्ति के साथ आगे की कार्यवाई करें और उसे यीशु के पास ले जाएँ।

ख. यह महत्वपूर्ण है कि आप उनके साथ प्रार्थना करके व्यक्ति की सहायता करें। उन्हें यह पता लगाने की आवश्यकता न बनायें कि आगे उन्हें स्वयं क्या करना है। उन्हें सहायता चाहिए।

१) ज़ोर से प्रार्थना करके और जो आप प्रार्थना करते हैं उसे उनके दोहराने के द्वारा उनकी प्रार्थना में अगुवाई करें।

२) बहुत ही सरल छोटे वाक्यों का उच्चारण करें।

३) समाप्त होने पर, उनसे पूछें "मसीह अब कहाँ है?" आशा है, वे कहेंगे, "अब मेरे भीतर!" या "मेरे दिल में!"

४) मूल्यांकन करें कि क्या व्यक्ति ने मसीह को समझा और वास्तव में उसे ग्रहण किया है।

मसीह को ग्रहण करने के लिए प्रार्थना का उदाहरण:

यीशु, मैं एक पापी हूँ और आपसे क्षमा माँगता हूँ। मैं अभी अपने पापों से मुड़ता हूँ। मुझे विश्वास है कि आप मेरे पापों के लिए मरे और आपके पास मुझे शुद्ध करने की सामर्थ है, इसलिए कृपया मुझे शुद्ध करें।

मैं आपको अपने जीवन में अपना उद्धारकर्ता बनने और जीवन भर मेरी अगुवाई करने के लिए आमंत्रित करता हूँ। यीशु के नाम में। आमीन।

९. मिलकर आनंद मनाएँ!

ग. नए मसीही विश्वासी के साथ आनन्द मनाएँ! जश्न मनाएँ! उन्हें बताएँ कि स्वर्ग में स्वर्गदूत जयजयकार कर रहे हैं।

घ. शिष्यत्व और आगे की कार्यवाई की बात करने में जल्दबाजी न करें! व्यक्ति को इस क्षण का आनंद लेने और मसीह से मिलने के इस समय को याद बनाने की अनुमति दें।

टिप्पणियाँ -

१०. आगे की कार्रवाई।

ङ. एक ऐसे व्यक्ति के समान धीरे-धीरे और प्रेम से आगे की कार्यवाई को आरम्भ करें, जिसे देखभाल के लिए अभी-अभी एक बच्चा दिया गया है।

१) उस व्यक्ति को एक बाइबल दें (यह वह नया नियम हो सकता है जिसका आप गवाही देने के लिए उपयोग कर रहे थे)। उन्हें पद्यों की ओर दिखाएँ।

२) नए विश्वासी को अन्य मसीहियों के साथ परिचित करवाएँ। उनकी मसीही संगती पाने में सहायता करें।

३) यदि आप उस व्यक्ति को अच्छी रीति जानते हैं, तो उन्हें अपनी कलीसिया या छोटे समूह में आमंत्रित करें (वे पहले से ही उसका भाग हो सकते हैं)।

४) उन्हें अपने विश्वास को दूसरों के साथ बाँटने के लिए प्रोत्साहित करें। उनके साथ जाने के लिए तैयार रहें जब वे अपने परिवार और मित्रों को बताते हैं कि उन्होंने मसीह को ग्रहण कर लिया है।

च. नए विश्वासी को शिष्यता में सम्मिलित होने में सहायता करें।

१) हमें शिष्य बनाने के लिए बुलाया गया है, केवल निर्णय लेने के लिए नहीं! सुसमाचार प्रचार प्रक्रिया को अवश्य एक शिष्यत्व प्रक्रिया में ले जाना चाहिए।

२) आगे की कार्यवाई के लिए कई अच्छे शिष्यत्व उपकरण उपलब्ध हैं (MOTMOT पाठ्यक्रम - व्यावहारिक शिष्यत्व, मार्गनिर्देशक की आठ भाग श्रृंखला, आदि)।

चर्चा विषय

किसी को मसीह के पास ले जाना एक महान आशीष है! हमें यह देखने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए कि उनका पालन-पोषण किया जाए और एक देखभाल करने वाले मसीही समुदाय में उनका स्वागत किया जाए। हालाँकि, हमें सावधान रहना चाहिए कि नए विश्वासियों को अभिभूत महसूस न करवाएँ या जैसे उन्हें एक सैन्य प्रशिक्षण शिविर में भर्ती करवा दिया हो।

- किसी को मसीह की ओर ले जाने से संबंधित कुछ विभिन्न स्थितियों पर चर्चा करें जो आपके अपने अनुभवों में घटित हुई हैं।
- संभावित स्थितियों पर चर्चा करें जिनमें आगे की कार्रवाई के अवसर सम्मिलित हो सकते हैं और नहीं भी हो सकते हैं।

यदि प्रतिक्रिया है - <u>तैयार नहीं</u>:

टिप्पणियाँ -

८. धैर्य रखें।

क. अकसर, एक व्यक्ति सुसमाचार के प्रति ग्रहणशील होगा, परन्तु अभी वह मसीह को ग्रहण करने के लिए तैयार नहीं है। हमें उनके साथ पहले धैर्य रखना चाहिए।

ख. पवित्र आत्मा को अपने समय अनुसार कार्य पूरा करने दें। भरोसा रखें कि परमेश्वर ने यहाँ तक आपका उपयोग किया है और अभी भी उनके दिल में काम कर रहे हैं।

९. स्मरण रखें।

क. उस व्यक्ति को कोमलता से स्मरण दिलाएँ कि आपकी चर्चा एक अलौकिक बैठक रही है, और यह कि परमेश्वर उन्हें अपने साथ एक व्यक्तिगत संबंध में बुला रहे हैं।

ख. यह अनुस्मारक एक भविष्यद्वाणी की आवाज के रूप में कार्य करता है, जो व्यक्ति को यह जानने के लिए चुनौती देता है कि परमेश्वर उन्हें बुला रहे हैं। बाद में, वे इस क्षण को महत्वपूर्ण होने के रूप में देख सकते हैं, भले ही वे बहुत देर तक प्रतिक्रिया न दें।

१०. संपर्क में रहें।

क. जितना हो सके मित्रता निभाएँ।

१) यह महत्वपूर्ण है कि व्यक्ति यह न समझे कि केवल इसलिए कि उन्होंने मसीह को ग्रहण नहीं किया, आप उन्हें अस्वीकार कर रहे हैं या उनसे दूर हो रहे हैं।

२) एक मित्र के रूप में उपलब्ध रहें। संभवतः परमेश्वर धीरे-धीरे जल्द ही दरवाजा खोल दें।

ख. सुसमाचार की अपनी चर्चा पर निर्माण करें।

१) सबसे अधिक संभावना है, परमेश्वर ने आपको इस व्यक्ति के जीवन में अलौकिक रूप से रखा है। आगे की सेवकाई के लिए तैयार रहें।

२) इस सेवकाई कार्य को पूरा करने के लिए प्रभु के प्रति विश्वासयोग्य रहें। छोटी चीजें बड़ी चीजों की ओर ले जाती हैं!

टिप्पणियाँ -

यदि प्रतिक्रिया है - <u>अस्वीकार या टालना</u>:

८. विनम्र रहें।

क. व्यक्ति पर मौखिक रूप से आक्रमण न करें या आत्म-धर्मी न बनें।

१) एक नीचतापूर्ण प्रतिक्रिया आपकी पूरी गवाही को नष्ट कर सकती है।

२) स्मरण रखें कि एक बार आप भी मसीह के बिना खो हुए थे।

३) संभवत: पवित्र आत्मा वास्तव में उन्हें कायल कर रहा हो और इसीलिए वे दृढ़ता से प्रतिक्रिया कर रहे हैं।

ख. दयालु और कोमल रहें।

१) पवित्र आत्मा को आप में तरस के साथ बहने दें, विशेष रूप से उस व्यक्ति के प्रति जो दृढ़ता से प्रतिक्रिया कर रहा है और मसीह को अस्वीकार कर रहा है।

२) उनकी अस्वीकृति या शत्रुता के प्रति आपकी प्रतिक्रिया वास्तव में वह हो सकती है जो उन्हें मसीह के पास ले आए!!

९. संघर्ष से बचें।

क. किसी भी कारण से, स्वयं को सुसमाचार से संबंधित किसी तर्क या विवाद में न पड़ने दें।

१) गवाही को जारी न रखें यदि वह सीधे शत्रुता या टकराव को उकसाती है।

२) पवित्र आत्मा को युद्ध करने दें, आप नहीं।

ख. किसी भी तनाव या बुरी भावनाओं के लिए वास्तविक पछतावा व्यक्त करें। शांति और प्रेम के साधन बनें।

१०. निश्चिंत रहें।

क. निश्चिंत रहें कि इस मुठभेड़ में परमेश्वर ने आपका उपयोग किया है।

१) हम वह सब नहीं देखते जो परमेश्वर आत्मिक क्षेत्र में कर रहे हैं।

२) हमें सुसमाचार बाँटने में आज्ञाकारी होने के लिए बुलाया गया है। आपने वह किया!

ख. प्रार्थना करें कि परमेश्वर दूसरों को इस व्यक्ति के प्रति सेवकाई जारी रखने के लिए लाएँ।

टिप्पणियाँ -

अंतिम विचार

मेरे मसीह में आने से पहले के १२ महीनों के दौरान, मुझे अलग-अलग लोगों द्वारा आठ बार आमने-सामने गवाही दी गई। परमेश्वर मुझे बुला रहे थे, परन्तु मैं उन से और उनके संदेशवाहकों से लड़ रहा था!

मैंने जोर अपशब्द बोले और दो बार शत्रुतापूर्ण था। मैं उस व्यक्ति पर हँसा और उसका मज़ाक उड़ाया जिसने मुझे दो बार गवाही दी थी। चार अन्य बार, मैंने विनम्रता से टाला और चुपचाप उस व्यक्ति और संदेश को खारिज कर दिया।

जब मैं मसीह के पास आया, तो मैं अकेला था। हालाँकि, जिन लोगों को मैंने अपशब्द बोले थे, उनमें से एक के शब्द मेरे हृदय में जलते रहे। मुझे उनकी तरस की अभिव्यक्ति दिखती रही और उनके प्रेम के कोमल शब्द सुनते रहे!

परमेश्वर ने उस स्थिति का उपयोग मुझे अपना निस्वार्थ प्रेम दिखाने के लिए किया। इसलिए, इस बात के लिए उत्साहित रहें कि परमेश्वर आपको सुसमाचार प्रचार में उपयोग कर रहे हैं, भले ही आपको कुछ भी परिणाम देखने को मिलें।

सार्वजनिक/सड़कों पर सुसमाचार प्रचार

जिन लोगों को सुसमाचार प्रचारक कहा जाता है, वे सार्वजनिक गवाही देने में सहज होते हैं। यह उन लोगों के लिए संभवत: ही कभी सच होता है जिन्हें एक प्रचारक होने का वरदान नहीं मिला है। अपने वरदान से बाहर काम करने का प्रयास न करें, जब तक कि परमेश्वर आपको ऐसा करने के लिए प्रेरित न करें!

सार्वजनिक तौर पर गवाही देने के लिए सुझाव

- सार्वजनिक गवाही देने के लिए दो लोगों को एक साथ जाना चाहिए
- एक व्यक्ति बोले, दूसरे को चुपचाप प्रार्थना करनी चाहिए,
- अनौपचारिक रहें और यदि संभव हो तो बातचीत स्वाभाविक रूप से आरम्भ होने दें
- अच्छा सुनने का गुण हमेशा लागू होता है
- पवित्र आत्मा की अगुआई में रहें, फिर बातचीत को आगे चलाएँ
- प्रश्न पूछें - "क्या मैं आपको यह बताने के लिए आपके समय से दो मिनट ले सकता हूँ कि परमेश्वर ने मेरे जीवन में क्या किया है?"
- यदि व्यक्ति खुला है तो सुसमाचार बाँटने के लिए तैयार रहें (प्रश्न पूछें)
- अस्वीकृति से प्रभावित न हों, परमेश्वर अभी भी काम पर हैं
- उन्हें देने के लिए एक पुस्तिका या नया नियम होना सबसे अच्छा है
- कई संक्षिप्त आमने-सामने के बजाय कुछ अलौकिक आमने-सामने को ताकें

टिप्पणियाँ -

परिशिष्ट

टिप्पणियाँ -

क१. सुसमाचार की छह प्रस्तुतियाँ।

लेखक की टिप्पणी:

यह खंड छह अतिरिक्त सुसमाचार प्रस्तुतियाँ प्रदान करता है जिनका उपयोग सुसमाचार प्रचार के नमूनों के रूप में किया जा सकता है। प्रत्येक प्रस्तुति अपनी सामग्री में समान है कि वह यीशु मसीह के माध्यम से सुसमाचार संदेश या उद्धार की योजना का संचार करती है। ये सभी समान हैं क्योंकि केवल एक ही सुसमाचार संदेश है। हालाँकि, प्रत्येक प्रस्तुति अपने रूप और प्रस्तुति की शैली में भिन्न है। ऐसा इसलिए है क्योंकि एक ही बात कहने के कई तरीके हैं।

विधि # १: रोमी मार्ग।

रोमी मार्ग सुसमाचार प्रचार प्रस्तुति

हमारी समस्य	- रोमियों ३:२३	सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।
परिणाम	- रोमियों ६:२३	पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का मुफ्त वरदान यीशु मसीह के में अनन्त जीवन है।
परमेश्वर का प्रावधान	- रोमियों ५:८	परमेश्वर हमारे लिए अपने प्रेम को इसमें प्रदर्शित करते हैं: जब हम पापी ही थे, तभी मसीह हमारे लिए मरे।
हमारा प्रत्युत्तर	- रोमियों १०:९	यदि आप मुँह से अंगीकार करें; "यीशु ही प्रभु हैं और अपने हृदय में विश्वास करें कि उन्हें मरे हुओं में से जिलाया, तो आप बच जाएंगे।

टिप्पणियाँ -

विधि #२: एक मूलभूत ७ बिंदु प्रस्तुति।

बिंदु #१: परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं (यूहन्ना ३:१६)।

बिंदु #२: आप एक पापी हैं (रोमि. ३:२३)।

बिंदु #३: आप अपने पापों में मरे हुए हैं (रोमि. ६:२३)।

बिंदु #४: मसीह आपके लिए मरे (रोमि. ५:६-८)।

बिंदु #५: आप यीशु में विश्वास के द्वारा बचाए जा सकते हैं (प्रेरितों के काम १६:३०,३१)।

बिंदु #६: आपको बचाया जा सकता है और आपके उद्धार का आश्वासन दिया जा सकता है (१यूह. ५:१०-१३)।

बिंदु #७: परमेश्वर की संतान होते हुए, आपको उनकी आज्ञा का पालन करना चाहिए (प्रेरितों के काम ५:२९)।

विधि #३: हाथ। [२]

लेखक की टिप्पणी:

हाथ प्रस्तुति पाँच भागों में की जाती है। पहले तीन भाग बताते हैं कि कैसे परमेश्वर दुविधा है। अंतिम दो भाग बताते हैं कि कैसे परमेश्वर के पास इसका समाधान है। प्रत्येक बिंदु के लिए विभिन्न पद्य सूचीबद्ध हैं। विद्यार्थी को सीखना चाहिए कि कैसे इनमें से कुछ वचनों का प्रभावशाली तरीके से उपयोग किया जाए।

(हाथ प्रस्तुति के लिए अगला पृष्ठ देखें।)

"हाथ" सुसमाचार प्रस्तुति

टिप्पणियाँ -

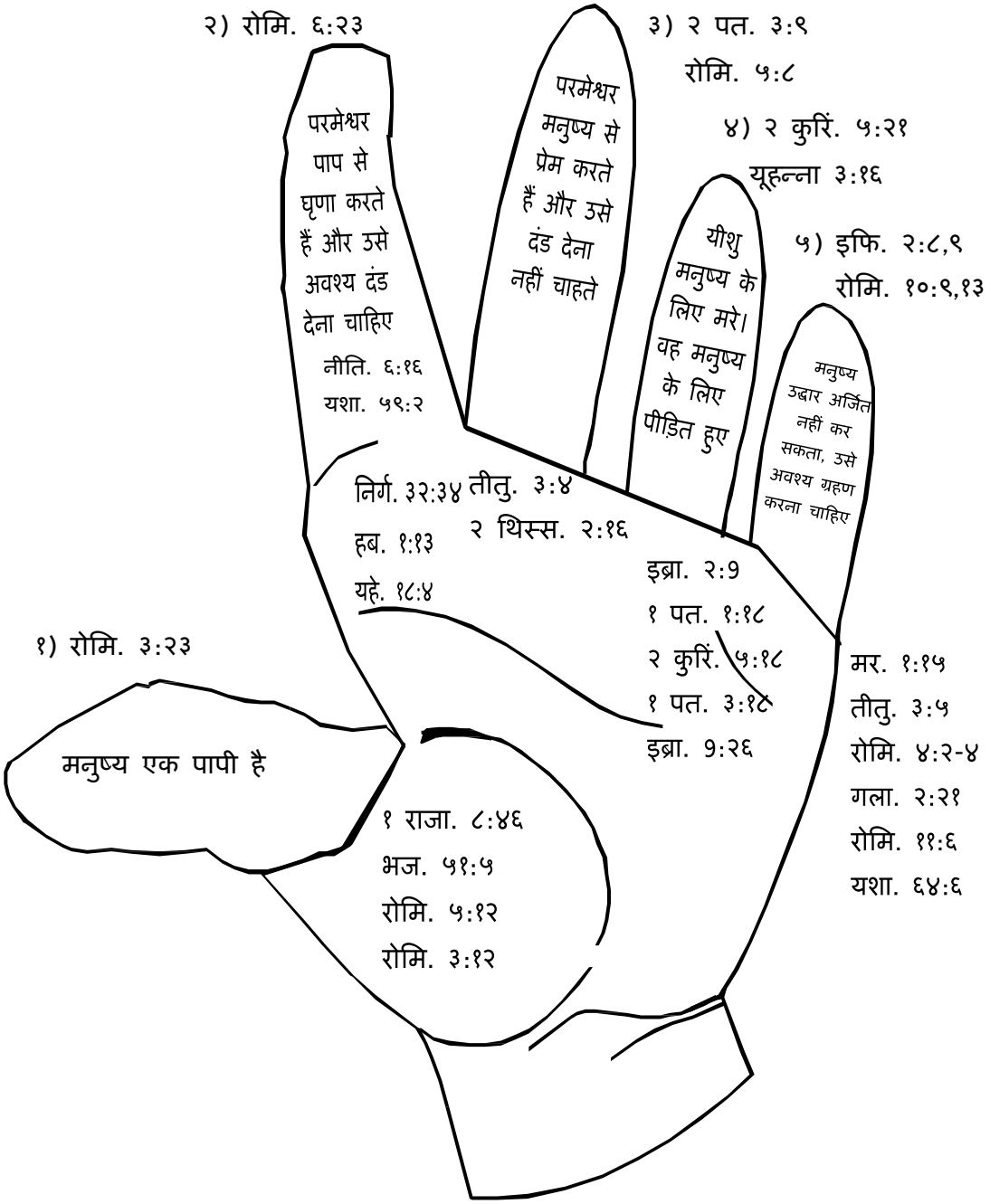

टिप्पणियाँ -

विधि #४: ३ भागों में उद्धार की योजना (इब्रा. ९:२४-२८ का प्रयोग करके)।

मसीह का प्रकट होना	पाप के संबंध में	पद्य
पृथ्वी पर/संसार में; मसीह का जीवन...उनका जन्म, मृत्यु और पुनरूत्थान	क्रूस पर उनके बलिदान द्वारा दंड और पाप की सजा का विनाश	इब्रा. ९:२६
स्वर्ग में: मसीह का स्वर्गारोहण	उनकी महिमा के द्वारा पाप की शक्ति का विनाश	इब्रा. ९:२४ (१ यूह. २:१,२ भी देखें)
नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में: मसीह की वापसी	उनके राज्य की स्थापना के द्वारा पाप के अस्तित्व का विनाश	इब्रा. ९:२८

विधि #५: कहानी।

परमेश्वर पवित्र हैं। वह पवित्र नामक पहाड़ पर रहते हैं।
मनुष्य पापी हैं। वह पाप नामक पर्वत पर रहते हैं।

दोनों पहाड़ एक बहुत बड़ी घाटी द्वारा अलग-अलग हो गए थे।

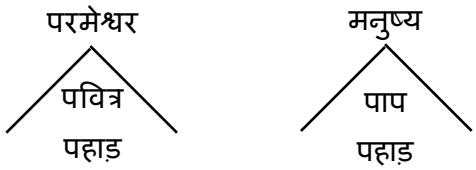

परमेश्वर ने घाटी को अपने प्रेम से भरने के लिए अपने पुत्र को भेजा। इस प्रेम ने एक ही समय में पवित्र पहाड़ और पाप पहाड़ को छुआ।

यह प्रेम इतना महान था कि इसने छोड़ने से इनकार कर दिया। अंत में, वह मर गया। इसलिए, अब एक पुल है जो २ पहाड़ों को जोड़ता है। यह अलगाव की घाटी के ऊपर से जाता है। परमेश्वर के पुत्र की मृत्यु ने मनुष्य को परमेश्वर के साथ संबंध बनाने में सक्षम बनाया। यीशु मसीह नामक यह पुल, एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ तक जाने का एकमात्र मार्ग प्रदान करता है।

विधि #६: परमेश्वर के साथ शांति के लिए कदम।[3]

टिप्पणियाँ -

कदम १ - परमेश्वर का उद्देश्य: शांति और जीवन

स्थिति: परमेश्वर आपसे प्रेम करते हैं और चाहते हैं कि आप शांति, बहुतायत का जीवन और अनन्त जीवन का अनुभव करें।

बाइबल कहती है: "हमें हमारे प्रभु येशु मसीह द्वारा परमेश्वर में शान्ति प्राप्त होती है।" (रोमि. ५;१)। "मैं इसलिये आया हूँ कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत का जीवन पाएँ।" (यूह. १०:१०ख)। "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा..." (यूह. ३:१६)।

परिवर्तन: अधिकांश लोग शांति और प्रचुर जीवन का अनुभव क्यों नहीं कर रहे हैं?

कदम २ - हमारी समस्या: अलगाव

स्थिति: परमेश्वर ने हमें अपने स्वरूप में प्रचुर जीवन पाने के लिए बनाया। उन्होने हमें स्वचालित रूप से प्रेम करने और उनकी आज्ञा मानने के लिए मशीन नहीं बनाया, परन्तु हमें इच्छा और चुनाव की स्वतंत्रता दी। हम सभी ने परमेश्वर की अवज्ञा करना और अपनी इच्छा से चलना चुना। हम आज भी यह चुनाव करते हैं। इसका परिणाम परमेश्वर से अलगाव होता है।

बाइबल कहती है: "क्योंकि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।" (रोमि. ३:२३)। "पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान मसीह में अनन्त जीवन है।" (रोमि. ६:२३)।

परिवर्तन: हमारी पसंद का परिणाम परमेश्वर से अलग होना है।

नोट: हमारे प्रयास

स्थिति: युगों से, लोगों ने निम्न द्वारा इस खाई (परमेश्वर और मनुष्य के बीच अलगाव) को जोड़ने का असफल प्रयास किया है: अच्छे कार्य, धर्म, दर्शन, नैतिकता।

बाइबल कहती है: "ऐसा मार्ग है जो मनुष्य को ठीक लगता है, परन्तु अन्त में मृत्यु की ओर ले जाता है।" (नीति. १४:१२)।

परिवर्तन: मनुष्य और परमेश्वर के बीच अलगाव की समस्या का एक ही उपाय है।

कदम ३ - परमेश्वर का उपाय: क्रूस

स्थिति: यीशु मसीह ही हमारी समस्या का एकमात्र उत्तर हैं। वह हमारे पापों के दंड का भुगतान करते हुए और परमेश्वर और मनुष्य के बीच की खाई को भरने के लिए क्रूस पर मरे और कब्र से जी उठे।

टिप्पणियाँ -

बाइबल कहती है: "मसीह ने भी एक बार ही पापों के लिए दु:ख भोगा; धर्मी अधर्मियों के लिए, जिससे वह लोगों को परमेश्वर के पास ले जायें..." (१ पत. ३:१८ क)। "किन्तु हम पापी ही थे, जब मसीह हमारे लिए मरे। इससे परमेश्वर ने हमारे प्रति अपने प्रेम का प्रमाण दिया है।" (रोमि. ५:८)।

परिवर्तन: परमेश्वर ने एकमात्र रास्ता प्रदान किया है और हमें चुनाव करना चाहिए...

कदम ४ - हमारी प्रतिक्रिया: मसीह को ग्रहण करना

स्थिति: हमें यीशु मसीह पर भरोसा करना चाहिए और उन्हें व्यक्तिगत निमंत्रण देकर स्वीकार करना चाहिए।

बाइबल कहती है: "देख मैं द्वार के सामने खड़ा हो कर खटखटाता हूँ। यदि तुम मेरी वाणी सुन कर द्वार खोलोगे, तो मैं तुम्हारे पास भीतर आ कर तुम्हारे साथ भोजन करूँगा और तुम मेरे साथ।" (प्रका. ३:२०)। "किन्तु जितनों ने उसे अपनाया, और उसके नाम में विश्वास किया, उन सब को उसने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया।" (यूह. १:१२)। "क्योंकि यदि तुम मुख से स्वीकार करते हो कि येशु प्रभु हैं और हृदय से विश्वास करते हो कि परमेश्वर ने उन्हें मृतकों में से जिलाया, तो तुम्हें मुक्ति प्राप्त होगी।" (रोमि. १०:९)।

परिवर्तन: क्या आप पुल के इस ओर (परमेश्वर से अलग) हैं या दूसरी ओर परमेश्वर के साथ (मसीह द्वारा बनाए गए पुल के माध्यम से) हैं?

निमंत्रण - क्या आप अभी यीशु मसीह को ग्रहण करना चाहते हैं?

मसीह को कैसे ग्रहण करें:

१) अपनी आवश्यकता स्वीकार करें (मैं पापी हूँ)।
२) अपने पापों से मुड़ने के लिए तैयार हों (पश्चाताप)।
३) विश्वास करें कि यीशु मसीह आपके लिए क्रूस पर मरे और कब्र से जी उठे।
४) प्रार्थना के द्वारा, यीशु को अंदर आने और पवित्र आत्मा के द्वारा आपके जीवन को नियंत्रित करने के लिए आमंत्रित करें (उन्हें प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में ग्रहण करें)।

प्रार्थना: प्रभु यीशु, मैं जानता हूँ कि मैं एक पापी हूँ और मुझे आपकी क्षमा की आवश्यकता है। मुझे विश्वास है कि आप मेरे पापों के लिए मरे। मैं अपने पापों से फिरना चाहता हूँ। मैं अभी आपको अपने हृदय और जीवन में आने के लिए आमंत्रित करता हूँ। मैं प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में आप पर भरोसा करना और आपका अनुसरण करना चाहता हूँ। यीशु के नाम में। आमीन।

परमेश्वर का आश्वासन: उनका वचन

यदि आपने यह प्रार्थना की है, तो स्मरण रखें कि बाइबल कहती है..
"क्योंकि "जो कोई प्रभु के नाम की दुहाई देगा, उसे मुक्ति प्राप्त होगी।" (रोमि. १०:१३)।

क२. २५ उद्धार इतिहास के तथ्य।

टिप्पणियाँ -

१) परमेश्वर जीवन के कर्ता हैं (उत्प. १:१; उत्प. २:२-४)।

२) परमेश्वर ने मानवजाति को अपनी समानता में बनाया (उत्प. १:२६,२७; उत्प. ५:१,२)।

३) परमेश्वर मानवजाति के साथ संबंध चाहते हैं (यूह. १७:२३; इब्रा. १०:१९-२३)।

४) पाप ने संसार में प्रवेश किया जब पहले व्यक्ति (आदम) ने परमेश्वर की अवज्ञा की (उत्प. ३; रोमि. ५:१२-१४)।

५) पाप परमेश्वर से अलगाव का कारण बना (उत्प. ३:२१-२४; इफि. २:१-३)।

६) पाप अनन्त मृत्यु की ओर ले जाता है (रोमि. ३:२३; रोमि. ६:२३)।

७) समस्त मानवजाति ने आदम के पापमय स्वभाव को विरासत में पाया है (रोमि. ५:१२; रोमि. ६:२३)।

८) परमेश्वर की सहायता के बिना, हम सबके सामने अनन्त मृत्यु है (इब्रा. २:९; २ कुरिं. १:९,१०)।

९) परमेश्वर ने अपने पुत्र को मानवजाति को बचाने के लिए भेजा (यूह. ३:१६,१७; लूका १९:१०)।

१०) परमेश्वर (पुत्र) हमसे मेल खाने हेतु मनुष्य बन गए (यूह. १:१४; कुलु. १:२२)।

११) यीशु (शरीर में परमेश्वर) निष्पाप और सिद्ध थे (२ कुरिं. ५:२१; इब्रा. ४:१५)।

१२) परमेश्वर ने संसार के पाप को यीशु पर रखा (१ यूह. २:२; १ यूह. ४:९,१०)।

१३) यीशु ने हमारे लिए दुख उठाया (लूका ९:२२; लूका २४:४६)।

१४) यीशु को सूली पर चढ़ाकर मार डाला गया था (यूह. १९:१६-२१; इब्रा. १२:२)।

१५) यीशु को कब्र में दफनाया गया था (मत्ती २७:६०; मर. १५:४६)।

१६) परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं में से जिलाया (प्रेरितों २:२४; प्रेरितों ५:३०)।

१७) यीशु कई लोगों के सामने प्रकट हुए (मर. १६:९-१४; १ कुरिं. १५:३-८)।

१८) यीशु परमेश्वर के साथ होने के लिए स्वर्ग लौट गए (कुलु. ३:१; यूह. २०:१७)।

१९) यीशु के द्वारा परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन संभव हुआ है (यूह. १७:१-५; रोमि. ५:२०,२१)।

२०) परमेश्वर ने यीशु को स्वर्ग और पृथ्वी पर का पूर्ण अधिकार दिया है (मत्ती २८:१८; प्रेरितों ७:४९)।

२१) यीशु किसी दिन जीवित और मरे हुओं का न्याय करने के लिए लौटेंगे (इब्रा. ९:२७; प्रेरितों १०:४२)।

२२) अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए प्रत्येक व्यक्ति को पाप से दूर होना चाहिए (प्रेरितों २:३८,३९; प्रेरितों १७:३०)।

२३) प्रत्येक व्यक्ति को अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए यीशु में विश्वास करना चाहिए (१ यूह. ५:१०-१२; यूह. १७:१-५)।

२४) यीशु पर प्रतीति करना विश्वास के द्वारा आता है (रोमि. १०:९,१०; इफि. २:८-१०)।

२५) यीशु हमें दूसरों को अनन्त जीवन के विषय में बताने की आज्ञा देते हैं (मत्ती २८:१८-२०; मर. १६:१५,१६)।

टिप्पणियाँ -

क३. व्यक्तिगत गवाही का उदाहरण#१ (लंबाई १:२५)।

यीशु को जानने से पहले मेरा जीवन

मैंने अपने आस-पास के सभी लोगों के सामने स्वयं को साबित करके तृप्ति पाने के प्रयास में २२ वर्ष बिताए। मेरी असुरक्षा के कारण मैंने और अधिक लोकप्रियता और अधिक से अधिक नाम पाने के प्रयास को जारी रखा। मुझे उन लोगों द्वारा "सफल" दिखना चाहता था जिन्हें मैं महत्वपूर्ण मानता था। मुझे स्कूल, खेल, आर्थिक, सामाजिक और विशेष रूप से महिलाओं के साथ अच्छा प्रदर्शन करने का दबाव लगातार महसूस होता रहा। मैं फ़स चूका था। मैं आराम नहीं कर सकता था। मुझे प्रतिष्ठा को बनाए रखना था। मैं पूरी रीति से निराश और दुखी हो गया। मैं कई पार्टियों की जान था, परन्तु अंदर से खाली था।

मैं एक मसीही कैसे बना

मैंने पहली बार पूर्ण अजनबियों और आम जानने वालों के माध्यम से यीशु के विषय में सुना। कई बार, लोग मेरे रास्ते में आये और मुझे मसीह के विषय में बताया कि वे किस रीति से मुझे शांति दे सकते हैं, जिसकी मैं खोज कर रहा था। मैं आमतौर पर उनके मुँह पर हँसता था उन्हें अनदेखा करता था। हालाँकि, एक रात जब में अकेले घर में था, मैंने सहायता के लिए परमेश्वर को पुकारा। मैंने अपना जीवन यीशु को सौंप दिया और अंतत स्वतंत्र हो गया। मुझे एहसास हो गया कि वास्तव में वह जीवन का अर्थ रखते हैं।

मेरा जीवन अब क्या अलग है

अब मैं मसीह के लिए जीता हूँ। वह मेरे पास परिपूर्णता और सुरक्षा लेकर आए। मेरे पास एक सुंदर पत्नी और परिवार है, साथ ही कई अच्छे मित्र भी हैं। मेरी "सफलता" मसीह में है, दूसरों की अपेक्षा में नहीं। सबसे अधिक, मैं इस अच्छे समाचार को अन्य लोगों के साथ बाँटने में सक्षम रहा हूँ। संभवत:: आप जैसे किसी से।

क३. व्यक्तिगत गवाही का उदाहरण#२ (लंबाई २:००)।

टिप्पणियाँ -

यीशु को जानने से पहले मेरा जीवन

मेरा पालन-पोषण उच्च नैतिकता के साथ कलीसिया में जाने वाले "अच्छे" परिवार में हुआ था। इसलिए, मैं पर्याप्त रूप से "धर्मी" महसूस करता था। हम कलीसिया में गए, १०% दिया, संडे स्कूल में पढ़ाया, और स्वयं को समुदाय में स्वेच्छा के काम के लिए दिया। जब तक मैं हाईस्कूल तक नहीं पहुँच गई, तब तक मैंने परमेश्वर की व्यक्तिगत आवश्यकता को कभी पहचाना नहीं।

मैं कई गतिविधियों में सम्मिलित थी: उन्नत कक्षाएँ, नाटक, गाना, पियानो, बैले, ओपेरा, ऑनर सोसाइटी, और व्यस्त सामाजिक जीवन। मैंने बहुत कुछ हासिल किया और अपनी उपलब्धियों से स्वयं को बहुमूल्य जाना, परन्तु कीमत चुकाए बिना नहीं। रात को चार घंटे सोने से मेरी स्व-चालित गति को ठीक से रखा जा सकता था। उच्च कक्षा वर्ष में, मैंने स्वयं पर दबाव से तनाव के कारण रक्त विकार विकसित कर लिया। यह दवा और काम के दबाव को कम करने के माध्यम से इलाज योग्य था, परन्तु मुझे मेरी गतिविधियाँ काम की लग रही थीं, इसलिए मेरा सारा जीवन बिखर रहा था।

जल्द ही, मेरा परिवार भी संकट में पड़ गया। मेरे माता-पिता अलग हो गए, जिसने हम बच्चों को चौंका दिया, क्योंकि वे शायद ही कभी बहस करते दिखते थे और बहुत प्रेम दिखाते थे। उन्होंने कहा कि उनका अलग होना, जिसके कारण तलाक हुआ, हमारी गलती नहीं थी, परन्तु मैं स्वयं को दोषी महसूस करता थी और असुरक्षित थी। मैं अब अपने जीवन पर नियंत्रण नहीं रख रहा थी।

मैं मसीही कैसे बनी

हताशा में मैंने परमेश्वर को पुकारा। मैंने क्रिसमस उपहार, या यहाँ तक कि भूखे बच्चों के लिए भोजन जैसी चीजों के लिए कभी-कभी प्रार्थना की। अब, टूटे और अकेले, मैंने परमेश्वर से असली उत्तर माँगे। मैं पूरी रीति से बेकार और प्रेमहीन महसूस कर रहा थी। मैंने रोज़ प्रार्थना की और बाइबल पढ़ी, कुछ खोजने के लिए, कुछ भी। एक मित्र, जिस पर मुझे भरोसा था, उसने मुझे एक युवा समूह में आमंत्रित किया जो परमेश्वर के विषय में नए तरीके से बात करते थे। परमेश्वर उनके निजी मित्र थे और इनकी जिंदगी बदली थी! मुझे यह दिलचस्प लगा, परन्तु छह महीने तक मैं अपने में जारी रही, जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहता थी। स्नातक स्तर की पढ़ाई से पहले, मैंने निर्णय लिया कि मुझे यीशु की आवश्यकता है, इसलिए मैंने उन्हें परमेश्वर और उद्धारकर्ता के रूप में मेरे जीवन में बुलाया।

मेरा जीवन अब कैसे अलग है

वह मेरे जीवन का सबसे अच्छा निर्णय था। मेरी समस्याएँ जल्द से दूर नहीं हो गईं, बल्कि परमेश्वर ने मुझे उन पर काम करने और वह व्यक्ति बनने में सहायता की, जैसा उन्होंने मुझे होने के लिए बनाया था। मैंने अपने पिता के प्रति अत्यधिक क्षमा का अनुभव किया, अपनी माँ और भाइयों के साथ बेहतर संचार किया, और स्वयं का नया मूल्य केवल मसीह में पाया। बाद में, परमेश्वर एक मसीही जीवन साथी लाए, हमने खुशी-खुशी शादी कर ली और मिलकर प्रभु की सेवा करते हैं। अभी भी मैं बहुत सी गतिविधियाँ करने की इच्छुक हूँ, परन्तु मेरे पति उसमें मेरी साहयता करते हैं। कुल मिलाकर, मुझे यीशु मसीह में सुरक्षा और प्रेम मिला है।

क४. एक व्यक्तिगत पुस्तिका का उदाहरण - बाहरी से

सुसमाचार अच्छा समाचार है

परमेश्वर का प्रेम: परमेश्वर ने संसार की सृष्टि की और मानव जाति को अपनी समानता में बनाया। परमेश्वर हमसे प्रेम करते हैं और स्वयं प्रेम का स्रोत हैं। वह चाहते हैं कि हम अपने दैनिक जीवन में उनकी प्रेममयी उपस्थिति का अनुभव करें।

हमारी समस्या: परमेश्वर के साथ हमारा संबंध तब टूट गया जब परमेश्वर द्वारा बनाए गए पहले मनुष्य, आदम ने पाप (गलत करने) को दुनिया में प्रवेश कराया। हम सभी को आदम का पापी स्वभाव विरासत में मिला और हम परमेश्वर से अलग हो गए हैं।

परिणाम: हमारी पाप समस्या का परिणाम यह है कि वे सभी जो परमेश्वर से अलग हैं, न्याय और अनंत काल के दंड के लिए नियत हैं।

परमेश्वर का प्रावधान: उनकी प्रेममयी दया से, परमेश्वर के पास उनके साथ हमारे संबंध को बहाल करने और हमें जीवन देने का एक प्रावधान है। परमेश्वर ने अपने पुत्र, यीशु मसीह को मनुष्य बनने और हमारे पापों के लिए दंड को सहने की अनुमति दी। उन्हें क्रूस पर चढ़ाकर यातना दी गई और मार डाला गया, परन्तु परमेश्वर ने उन्हें मरे हुओं में से जिलाया। इसने हमारे ऊपर से पाप की शक्ति को पराजित किया।

हमारी प्रतिक्रिया: यदि हम विश्वास में मसीह की ओर मुड़कर परमेश्वर के प्रावधान को स्वीकार करते हैं, तो हम सुसमाचार की बचाने की सामर्थ का अनुभव कर सकते हैं। परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन उन सभी के लिए उपलब्ध है जो पाप से दूर हो जाते हैं, यीशु को उन्हें शुद्ध करने देते हैं और मसीह को उनके जीवन में आने और

मसीह नया जीवन देते हैं

परमेश्वर का प्रेम	क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया, कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया (यूहन्ना ३:१६)।
हमारी समस्या	क्योंकि सब ने पाप किया और सब परमेश्वर की महिमा से वंचित हो गए हैं (रोमि. ३:२३)।
परिणाम	पाप की मजदूरी मृत्यु है (रोमि. ६:२३)।
परमेश्वर का प्रावधान	किन्तु हम पापी ही थे, जब मसीह हमारे लिए मरे। इससे परमेश्वर ने हमारे प्रति अपने प्रेम का प्रमाण दिया है। (रोमियों ५:८)।
हमारी प्रतिक्रिया	अतः आप लोग पश्चात्ताप करें और परमेश्वर के पास लौट आयें, जिससे आपके पाप मिट जायें (प्रेरितों के काम ३:१९)।

अधिक सहायता के लिए संपर्क करें:
एलटीआई - (७५७) ४९०-५७०१

हम आपके लिए
अच्छा समाचार लाए हैं...

कैविन, कैरल और कैथरीन

क४. व्यक्तिगत पुस्तिका का उदाहरण - अंदर से

कैविन के जीवन में मसीह

मसीह से पहले मेरा जीवन

मैंने अपने आस-पास के अन्य लोगों के सामने स्वयं को साबित करके तृप्ति खोजने के प्रयास में कई वर्ष बिताए। मेरी असुरक्षा ने मुझे और अधिक लोकप्रियता और नाम के लिए प्रयास करने हेतु प्रेरित किया। मुझे उन लोगों द्वारा "सफल" दिखने की आवश्यकता थी जिन्हें मैंने महत्वपूर्ण माना था। मुझे स्कूल, खेल, आर्थिक, सामाजिक और यौन रूप से अच्छा प्रदर्शन करने का दबाव महसूस हुआ।

मैं फंस गया था और मैं स्वयं नहीं हो पा रहा था। मुझे एक प्रतिष्ठा के लिए जीना था। मैं पूरी रीति से निराश और दुखी था। मैं कई पार्टियों की जान था, परन्तु अंदर से खाली था।

मैं एक मसीही कैसे बना

कई परिचित और पूर्ण अजनबी मेरे रास्ते में आए और मुझे यीशु के विषय में बताया, कि वह वह शांति लाएँगे जिसकी मुझे खोज थी। मैंने इसे हँसी में उठाया और उनकी उपेक्षा की, पर एक देर रात तक, अकेले ही, मैंने सहायता के लिए परमेश्वर को पुकारा। मैंने अपना जीवन यीशु को दे दिया और अंत में स्वतंत्र हो गया। मुझे एहसास हुआ कि वह जीवन का अर्थ रखते हैं।

मेरा अब का जीवन

अब मैं मसीह के लिए जी रहा हूँ। उन्होंने मुझे पूर्ति और सुरक्षा दी है। मेरी एक खूबसूरत पत्नी और परिवार है, कई अच्छे मित्र हैं। मेरी "सफलता" मसीह में है, दूसरों की दृष्टि में नहीं। मैं

कैरल के जीवन में मसीह

मसीह से पहले मेरा जीवन

मेरा पालन-पोषण एक "अच्छे" परिवार में हुआ, जो कलीसिया में जाता था, १०% देता था, और संडे स्कूल पढ़ाता था। मुझे हाई स्कूल तक परमेश्वर की कोई आवश्यकता महसूस नहीं हुई। मैं नाटक, संगीत और बैले जैसी कई गतिविधियों में थी। मैंने अच्छा किया, परन्तु यह महंगा था। मैं रात में सिर्फ चार घंटे सोती थी। मुझे तनाव से रक्त विकार हो गया और मुझे मजबूर होना पड़ा। मेरी उपलब्धियों में मेरा आत्म-मूल्य था, इसलिए मैं कुचल गई थी।

फिर मेरा परिवार बिखर गया। मेरे माता-पिता का तलाक हो गया, जिसने हमें चौंका दिया, क्योंकि वे शायद ही कभी बहस करते थे और खुश लगते थे। उन्होंने कहा कि यह हमारी गलती नहीं थी, परन्तु मुझे दोषी, असुरक्षित और अप्रिय महसूस हुआ। मैं असहाय थी।

मैं मसीही कैसे बनी

मैंने उत्तर के लिए परमेश्वर को पुकारा और सहायता के लिए बाईबल में ढूँढा। एक मित्र ने मुझे एक युवा समूह में आमंत्रित किया, जहाँ उन्होंने अपने जीवन को बदल कर परमेश्वर को व्यक्तिगत बताया! इसने मुझे चकित कर दिया, परन्तु मैंने छह महीने इंतजार किया, जल्दबाजी में निर्णय लेने को तैयार नहीं थी। फिर, मैंने निर्णय लिया कि मुझे भी यीशु की आवश्यकता है, इसलिए मैंने उन्हें अपने जीवन में प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप बुलाया।

मेरा अब का जीवन

वह मेरे जीवन का सबसे अच्छा निर्णय था। मेरी समस्याएँ गायब नहीं हुईं, परन्तु परमेशवर ने उनमें मेरी सहायता की। मैंने अपने पिता को क्षमा कर दिया, अपने परिवार के साथ

कैथरीन के जीवन में मसीह

एक मसीही परिवार में जीवन

एक छोटे बच्चे के रूप में, मैं आपको यह नहीं बता सकती कि कैसे मसीह ने मेरे जीवन को बदल दिया है। जब मैं थोड़ी बड़ी हो जाऊँगी तो मैं स्वयं परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हो जाऊँगी। हालाँकि, मैं आपको बता सकती हूँ कि यह जानने में बड़ी सुरक्षा है कि मैं एक ऐसे परिवार में पली-बढ़ी हूँ जो मसीह के प्रति समर्पित है। चूंकि मेरे माता-पिता यीशु के प्रति समर्पित हैं, वे मुझे और एक-दूसरे से प्रेम करने के लिए प्रतिबद्ध हैं, और हमारा परिवार नहीं टूटेगा।

मैं परमेश्वर के प्रेम के विषय में सीख रही हूँ और देख रही हूँ कि उनके सिद्धांत मेरे माता-पिता में काम करते थे। मैं उन आशीषों को देखती हूँ जो परमेश्वर की इच्छा की आज्ञाकारिता में जीने से आती हैं। उम्मीद है, मैं अन्य आहत लोगों की सहायता कर पाऊँगी जिन्हें एक मसीही घर की देखभाल, सुरक्षा और गर्मजोशी को जानने की आवश्यकता है।

आपके जीवन में मसीह

मसीह को ग्रहण करने की प्रार्थना:

यीशु, मैं एक पापी हूँ और आपकी क्षमा की आवश्यकता है। मैं अभी अपने पापों से दूर होता हूँ। मुझे विश्वास है कि आप मेरे लिए मरे और मुझे शुद्ध करने की सामर्थ रखते हैं, इसलिए कृपया इसे अभी करें।

मैं आपको अपने जीवन में अपना उद्धारकर्ता बनने और जीवन भर मेरी अगुवाई करने के लिए आमंत्रित करता हूँ। यीशु के नाम में, आमीन।

टिप्पणियाँ -

क५. उद्धार से संबंधित प्रश्नों और बहानों के प्रत्युत्तर।

क. सुसमाचार प्रचार की आगे की तैयारी।

१. अब जबकि हमारे पास सुसमाचार प्रचार करने के लिए आवश्यक मूलभूत उपकरण हैं, हम विचार कर सकते हैं कि स्वयं को और कैसे तैयार किया जाए।

२. १ पत. ३:१५ का निर्देश हमें अपने विश्वास की रक्षा करने के लिए तैयार रहने का निर्देश देता है। यह सुसमाचार प्रचार की मूलभूत तैयारियों में से एक है।

चर्चा विषय

कक्षा में चर्चा और अभ्यास को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित में से प्रत्येक मामले का उपयोग करें। प्रत्येक प्रश्न या बहाने के बाद स्थिति का प्रत्युत्तर देने के लिए उपयोग करने हेतु उपयुक्त पद्यों की एक सूची है। विचार करें कि प्रश्न या बहाने का सबसे प्रभावी ढंग से प्रत्युत्तर देने के लिए प्रत्येक पद्य का उपयोग कैसे किया जा सकता है। छात्रों को अन्य उपयोगी पद्यों का सुझाव देने की अनुमति दें।

शिक्षण सुझाव

प्रत्येक प्रश्न या बहाने से संबंधित पद्यों का उपयोग कैसे करें, इस विषय में एक संक्षिप्त चर्चा के बाद, शिक्षक को अभ्यास के समय को बढ़ावा देना चाहिए। शिक्षक प्रश्न या बहाने वाला व्यक्ति हो सकता है। प्रतिक्रिया बनाने में कक्षा भाग ले सकती है। एक छात्र को जवाब देना आरम्भ करना चाहिए। जब वह समाप्त कर लेता है, तब अन्य छात्र (एक-एक करके) प्रतिक्रिया में और जोड़ सकते हैं।

टिप्पणी: अधिकांश परिशिष्ट सामग्री छात्र को संसाधन जानकारी के रूप में दी जाती है। कक्षा में सारी सामग्री प्रस्तुत नहीं की जाती है।[४]

ख. उद्धार के विषय में प्रश्न।

१. पाप क्या है? (देखें १ उद्धार के विषय में प्रश्न। ३:१०; १यूह. ५:१७; यूह. १६:८,९; रोमि. १४:२३; और याकू. ४:१७।)

२. परमेश्वर इस संसार में बुराई को अनुमति क्यों देते हैं? (देखें व्यव. ३०:१९; रोमि. ६:१४; और यूह. १४:६।)

३. क्या मुझे अपना निर्णय सार्वजनिक करना होगा? (देखें मत्ती १०:३२,३३; रोमि. १०:१०; मरकुस ८:३८; लूका १२:८; और यूह. १२:४२,४३।)

४. बाइबल में सभी विसंगतियों और अंतर्विरोधों के विषय में क्या? (देखें है ५५:८,९; दानि। १२:१०; १ कुरिं. २:१४; २ पत. ३:१६-१८।)

टिप्पणियाँ -

५. मैं कैसे जान सकता हूँ कि एक परमेश्वर है? (रोमि. १:१९; भज. ८:३; और भज. ३३:६ देखें।)

६. मुझे यीशु के लहू की आवश्यकता क्यों है? (देखें लैव्य. १७:११; मत्ती २६:२८; इब्रा. ९:२२; रोमि. ५:९,१०; और पत. १:१८,१९।)

ग. उद्धार से संबंधित बहाने।

१. मैं अभी निर्णय नहीं लेना चाहता (देखें यहो. २४:१५; १ राजा १८:२१; नीति. २७:१; ५५:६; मत्ती २४:४४; लूका १२:१९,२०; प्रेरितों २२:१६; और २ कुरिं. ६:२)।

२. मेरे लिए अब बदलने में बहुत देर हो चुकी है (देखें यहे. ३३:१९; मत्ती २०:१६; यूह. ६:३७; और रोमि. १०:१३)।

३. मैंने पहले ही मसीही बनने का प्रयास कर चूका हूँ, परन्तु मैं ऐसा नहीं कर सख्त हूँ (देखें दानि. ३:१७; रोमि. ४:२१; २ तीमु. १:१२; इब्रा. ७:२५; यहू. २४)। यीशु और उनकी क्षमताओं पर ध्यान देना स्मरण रखें।

४. बहुत सारे रहस्य हैं (देखें व्यव. २९:२९; यूह. १३:७; प्रेरितों १:७; और १ कुरिं. १३:१२)।

५. मुझे एक उद्धारकर्ता की आवश्यकता नहीं है (देखें यूह. ३:१८,३६; रोमि. ३:२३; रोमि. ६:२३; और इब्रा. २:३)।

६. परमेश्वर प्रेम हैं। सजा का कोई खतरा नहीं है (देखें मत्ती २२:१३; लूका १३:३; और २ पत. २:४)।

७. कलीसिया में बहुत से पाखंडी हैं (देखें अय्यूब ८:१३; मत्ती ७:१; रोमि. १४:१२; १ पत ४:८)।

८. कीमत बहुत महंगी है। लागत बहुत अधिक है (देखें भज. ११६:१२; मर. ८:३६; लूका १८:२९,३०; और १ पत. २:२४)।

९. मैं अपने मित्रों को खोना नहीं चाहता (देखें निर्ग. २३:२; नीति. १३:२०; १ कुरिं. १५:३३; और २ कुरिं. ६:१४)।

१०. मुझे सताया जाएगा (देखें मत्ती ५:११,१२; २ तीमु. ३:१२; और प्रका. २:१०)।

११. मैं अपनी पापी आदतों (पापों) को रोकना नहीं चाहता (देखें लूका १३:३; गला. ६:८; प्रका. २१:८; यूह. ८:३६; फिल. ४:१३; और इब्रा. ७:२५)।

१२. मेरे पाप बड़े पाप नहीं हैं। वे केवल छोटे हैं (देखें ४८:२२; यहेज. ५९:२; यूह. ८:३४; रोमि. ६:२३; और १ कुरिं. ६:९)।

टिप्पणियाँ -

क६. पूरी हुई भविष्यद्वाणी के माध्यम से सुसमाचार प्रचार।

क. मसीहा आ गए हैं।

१. सुसमाचार प्रचार करने के सबसे बाइबल आधारित तरीकों में से एक पूरी भविष्यद्वाणी की घोषणा के माध्यम से है।

क. निश्चित रूप से यहूदी लोगों के लिए सुसमाचार प्रचार में इस दृष्टिकोण पर ध्यान देना चाहिए।

ख. हालाँकि, यह दूसरों तक भी पहुँचने का एक प्रभावी तरीका हो सकता है।

२. क्यों पूरी हुई भविष्यद्वाणी सुसमाचार प्रचार के लिए कारगर है।

क. पूरी हुई भविष्यद्वाणी बाइबल की एकता की पुष्टि करती है और इसकी विश्वसनीयता और इसके संदेश की विश्वसनीयता को बढ़ाती है।

ख. पूरी हुई भविष्यद्वाणी परमेश्वर की संप्रभुता को प्रकट करती है। यह एहसास करना आश्चर्यजनक है कि विशिष्ट भविष्यद्वाणियाँ जो विशिष्ट रूप से यीशु मसीह में पूरी हुई थीं, उनके जन्म से कई सौ वर्ष पहले की गई थीं।

१) इन भविष्यद्वाणियों की गुणवत्ता अद्भुत है। वे बहुत विशिष्ट और सटीक हैं।

२) इन भविष्यद्वाणियों की मात्रा भी अद्भुत है। वे केवल ४ या ५ नहीं हैं। वे कम से कम ४० या ५० हैं।

ग. भविष्यद्वाणी परमेश्वर की छुटकारे की योजना पर केंद्रित है। यह मसीहा पर केंद्रित है। यह दृष्टिकोण दिखाता है कि कैसे वादा पूरा हुआ, और यह कि पूर्ति आज प्रत्येक व्यक्ति के लिए है। हर व्यक्ति को एक मसीहा की आवश्यकता है!

ख. ऐसे पद्य जो दिखाते हैं कि मसीहा आ चुके हैं।

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

निम्नलिखित महत्वपूर्ण पूरी हुई भविष्यद्वाणियों की एक सूची है। पद्यों का अध्ययन करें और चर्चा करें कि उन्हें सुसमाचार प्रचार में कैसे उपयोग किया जा सकता है। पिछले अभ्यास को दोहराएँ। शिक्षक अविश्वासी को चित्रित कर सकता है और छात्र भविष्यद्वाणियों का उपयोग सुसमाचार प्रचार करने के लिए कर सकते हैं।

१. भविष्यद्वाणी: मसीह यहूदा के गोत्र से होंगे (देखें उत्प. ४९:१० और लूका ३:३३)।

२. भविष्यद्वाणी: मसीहा दाऊद के वंशज होंगे (देखें यशा:६,७ और लूका १:३२,३३)।

३. भविष्यद्वाणी: मसीहा एक कुंवारी से पैदा होंगे (देखें यशा. ७:१४ और लूका १:२६-३०)।

४. भविष्यद्वाणी: मसीहा बेतलेहेम में पैदा होगा (मीका ५:२ और मत्ती २:१-६)।

५. भविष्यद्वाणी: मसीहा हमारे पापों के लिए मरेंगे (देखें यशा. ५३:८ और २ कुरिं. ५:२१)।

६. भविष्यद्वाणी: मसीहा की मृत्यु क्रूस के द्वारा होगी (देखें भज. २२:१४-१७ और लूका २३:३३)।

७. भविष्यद्वाणी: मसीहा जी उठेंगे (देखें भज. १६:१० और १ कुरिं. १५:४)।

८. भविष्यद्वाणी: उनके सामने मार्ग तैयार किया जाएगा (देखें यशा ४०:३-५; मला. ४:५,६; लूका ३:३-६; ७:२४,२७; और मत्ती ११:१३,१४)।

९. भविष्यद्वाणी: मसीहा एक गधे पर सवार होकर यरूशलेम में विजयी प्रवेश करेंगे (देखें जक. ९:९; मर. ११:७,९,११)।

१०. भविष्यद्वाणी: चाँदी के ३० टुकड़ों के लिए एक करीबी मसीहा को धोखा दिया जाएगा (देखें भज. ४१:९; जक. ११:१२; लूका २२:४७,४८; और मत्ती. २६:१५)।

११. भविष्यद्वाणी: सैनिक उनके कपड़ों के लिए जुआ खेलेंगे (देखें भज. २२:१७,१८ और मत्ती २७:३५,३६)।

१२. भविष्यद्वाणी: मसीहा को छेदा जाएगा परन्तु उनकी हड्डियाँ नहीं तोड़ी जाएँगी (देखें जक. १२:१०; भज. ३४:२०; और यूह. १९:३२-३६; २०:२७)।

टिप्पणियाँ -

अंतिम टिप्पणियाँ

[१]"बिल हाइबल्स की किताब, ऑनेस्ट टू गॉड से लिया गया। बिल हाइबल्स द्वारा कॉपीराइट सी १९९०। ज़ोंडरवन पब्लिशिंग हाउस की अनुमति से उपयोग किया गया।"

[२]एवरी विलिस, जूनियर मास्टरलाइफ II: शिष्यों के लिए शिष्यता प्रशिक्षण। सन्डे स्कूल बोर्ड ऑफ़ द सदर्न बैपटिस्ट कन्वेंशन, १९८०। मूल हाथ अवधारणा विलिस की है।

[३]बिली ग्राहम, स्टेप्स टू पीस विथ गॉड। मिनियापोलिस, मिन.: बिली ग्राहम इवेंजेलिस्टिक एसोसिएशन।

[४]केविन हिनमैन, पर्सनल रेफ्लेक्शंस ऑन ईवेनजेलिस्म। वर्जीनिया बीच, वर्जीनिया, १९९४। इस पाठ्यक्रम का निर्माण के. हिनमैन, जॉन मैनियन और रेमन केसी के संयुक्त प्रयास से किया गया था, जिसमें के. हिनमैन पाठ्यक्रम संपादक के रूप में कार्यरत थे। इसे अनुमति द्वारा MOTMOT अर्थात मोटमोट (द्वितीय संस्करण) में उपयोग के लिए योगदान दिया गया है।